समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017
RNI No. 38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 सितंबर 2017

वर्ष : 30, अंक : 06
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 सितम्बर 2017
वार्षिक चंदा : ₹ 40/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 500/-
प्रति अंक : ₹ 2/-
ई-मेल : news@awgp.org
news.shantikunj@gmail.com

3 15 हैक्टेअर पहाड़ी भूमि पर रोपे 11000 पौधे खेत तालाब भी बनाया

5 बिहार के छः जिलों में चल रहे हैं बाढ़ राहत एवं पुनर्वास के कार्य

7 ब्रिटिश उच्चायुक्त सर डोमिनिक का देव संस्कृति विश्वविद्यालय में भव्य स्वागत

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में सिख समागम

8

नवनिर्वाचित

माननीय राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति जी का

अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से अभिनंदन

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद का अभिनन्दन करते हुए

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकया नायडू को युगसाहित्य एवं गायत्री मंत्र का उपवस्त्र भेंट कर सम्मानित करते हुए

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद तथा उपराष्ट्रपति माननीय श्री वैंकया नायडू दोनों ही गायत्री परिवार की गतिविधियों से भलीभाँति परिचित हैं और पूर्व में आदरणीय डॉ. साहब की उपस्थिति में आयोजित बड़े कार्यक्रमों में भाग ले चुके हैं। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं गायत्री परिवार के हजारों लोगों ने उनके निर्वाचन और शपथ ग्रहण के समय उन्हें अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की थीं।

आदरणीय डॉ. साहब क्रमशः 18 एवं 19 अगस्त को व्यक्तिगत रूप से भी उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देने उनके आवास पर पहुँचे। उन्होंने गायत्री महामंत्रयुक्त उपवस्त्र एवं युगसाहित्य भेंट कर दोनों महानुभावों का सम्मान किया। इस अवसर पर हुई शिष्टाचार वार्ता में राष्ट्र के उत्कर्ष की संभावनाओं और योजनाओं पर संक्षिप्त चर्चा हुई।

राष्ट्रपति भवन में स्थापित होगा युगऋषि का वाङ्मय

राष्ट्रपति जी से राष्ट्र निर्माण में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की भूमिका पर विशेष रूप से चर्चा हुई। इस पर महामहिम ने परम पूज्य गुरुदेव का समग्र वाङ्मय राष्ट्रपति भवन के पुस्तकालय में स्थापित करने के लिए स्वीकृति प्रदान की है।

आत्म समर्पण की साधना से मिलते हैं परमात्मा

दो विकल्प

आत्मा की परिपूर्णता प्राप्त कर परमात्मा में प्रतिष्ठित होने के दो मार्ग हैं-एक प्रयत्नपूर्वक प्राप्त करना और दूसरा अपने आपको सौंप देना। प्रथम मार्ग में विभिन्न साधनाएँ करनी पड़ती हैं, चिन्तन, मनन, ज्ञान के द्वारा विभिन्न उपक्रमों में सचेष्ट रहना पड़ता है। दूसरी ओर सम्पूर्ण भाव से परमात्मा के प्रति समर्पण करना पड़ता है। तरह-तरह की साधनाएँ, विधि-विधानों का अवलम्बन लेकर प्रयत्नपूर्वक ईश्वर-प्राप्ति की आकांक्षा रखने वाले बहुत मिल सकते हैं, किन्तु सम्पूर्ण भाव से अपने परमदेव के समर्पण हो जाने वाले, जीवन में सर्वत्र ही परमात्मा को प्रतिष्ठित करने वाले, अपनी समस्त बागडोर प्रभु के हाथों सौंप कर उसकी इच्छानुसार संसार के महाभारत में लड़ने वाले अर्जुन विरले ही होते हैं।

अर्जुन स्वयं एक नैष्ठिक साधक, दृढ़व्रती थे। जीवन में कठोर साधनाओं और तपश्चर्याओं के द्वारा उन्होंने अनेकों उत्कृष्ट सफलताएँ अर्जित की थीं। किन्तु इन सबके बावजूद भी रणक्षेत्र में हुए विषाद, खिन्नता को वे शान्त न कर सके, न अपने कर्तव्य का निर्धारण ही। मोह और विषाद से खिन्नमना अर्जुन अन्त में भगवनान के चरणों में गिरकर कहने लगे :-

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढ़चेताः। यच्छेयः स्यानिश्चितं ब्रूहि तन्मे, शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।

अर्थात्-हे प्रभो! कायरता रूपी आंतरिक दोष के द्वारा मेरा साहसिक स्वभाव आहत हो गया। मैं धर्म सम्मूढ़ (धर्म के बारे में संशय की स्थिति में) हूँ। मैं आपकी शरण में आया आपका शिष्य हूँ। जिसमें मेरा निश्चित रूप से हित है, वह मुझे बताइये। महान विचारक संत कबीर ने कहा है :-

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर।।

जीवनभर की साधना, साधु संगति, उपासना, ज्ञानार्जन के बावजूद भी संत कबीर अपने आप में संतुष्ट नहीं हुए। अंत में अपने समस्त जीवन को प्रभु-समर्पण करने में ही उनको जीवन का संतोष लाभ मिला।

प्रभु प्राप्ति की प्रमुख बाधा

विभिन्न साधनाओं, व्रत, तपश्चर्याओं में अपनी शक्ति का परिचय देकर अपनी साधना का हिसाब लगाने वाले साधकों में एक प्रकार का विशेष सात्विक अहंकार पैदा हो जाता है और यही एक दीवार बनकर आत्मा और परमात्मा के बीच अवरोध खड़ा कर देता है। इसे ही शास्त्रकारों ने ज्ञानजन्य अन्धकार कहा है। यही कारण है कि ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, सिद्ध, योगी बनना दूसरी बात है, किन्तु सम्पूर्ण भाव से परमात्मा की उपलब्धि करना, उसमें प्रतिष्ठित होना सर्वथा भिन्न है।

विभिन्न साधनाओं के रहते भी अपने समस्त कर्तृत्व, अहंकार, निजत्व की भावनाओं को मिटाकर समस्त जीवन को प्रभु चरणों में समर्पण किये बिना परमात्मा में प्रतिष्ठित होना संभव नहीं है।

सन्त विनोबा भावे ने कहा है, ''चित्त शुद्धि के लिए की जाने वाली विविध साधनाओं को मैं सोडा या साबुन की उपमा दूँगा और ईश्वर के प्रति आत्म-समर्पण के भाव को जल की संज्ञा दूँगा। सोडा-साबुन जल के बिना काम नहीं दे सकते, किन्तु सोडा-साबुन के बिना निर्मल जल से भी सफाई का काम हो जाता है।

समर्पण की कसौटी

परमात्मा से साक्षात्कार, उनमें प्रतिष्ठित होने का सरल और सहज मार्ग है अपनी शक्ति-सामर्थ्य, कर्तव्य के अभिमान का त्याग करना और सम्पूर्ण भाव से परमात्मा को अपने आप का निवेदन समर्पण करना। तब सर्वत्र ही सबके साथ समानता, नम्रता, उदारता आत्मीयता का सम्बन्ध बढ़ता जाता है। तब हममें सबसे ऊपर और सबके आगे रहने की प्रवृत्ति नहीं होगी, वरन् सबके पीछे और नीचे प्रभु के चरण कमलों में हमारा जीवन होगा। ''सबके हित में अपना हित, सबके सुख में अपना सुख।'' यदि इन उदार भावनाओं और चरित्र का गठन नहीं होता है तो हमारा आत्म-समर्पण अधूरा है, अथवा हम आत्म-समर्पण का स्वाँग रच रहे हैं।

प्रभु आपकी क्या इच्छा है? आपका क्या आदेश है देव? यह प्रश्न निरन्तर अन्तर में उठता रहे तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि परमात्मा अपनी इच्छा, प्रेरणानुसार हमें सहज ही लक्ष्य तक पहुँचा देंगे। दिव्य प्रेरणाओं से मानव जीवन दिव्य कर्मों में प्रयुक्त होने लगता है और मनुष्य सहज ही श्रेय की प्राप्ति कर लेता है। आत्मा की परिपूर्णता प्राप्त होकर परमात्मा में गति मिलती है।

इसलिए मनीषियों ने ज्ञान-विज्ञान उपासना-साधना क्षेत्र में पर्याप्त खोज करने के उपरान्त ही कहा है ''पिता नोऽसि।'' अर्थात् ''आप हमारे पिता हैं।'' हे प्रभु! आप हमारे पिता हैं, आप ही हमारी माँ हैं, आप ही बन्धु-सखा सब कुछ आप ही हैं। आप ही सर्वोपरि विद्या धन सम्पदाएँ हैं। आप ही हमारे जीवन के देवाधिदेव सर्वेश्वर प्रभु हैं।

परमात्मा में प्रतिष्ठित होने के लिए, उन्हें प्राप्त करने के लिए अपने समस्त जीवन की बागडोर उन्हीं के हाथों सौंपनी पड़ेगी। उन्हें ही हृदय मन्दिर में प्रतिष्ठित करना होगा। उन्हीं की इच्छा-प्रेरणा को जीवन का मंत्र बनाना पड़ेगा। सम्पूर्ण भाव से उनकी ही शरण में जाना पड़ेगा। अन्यथा हमारा अभियान, आकांक्षाएँ, कर्तृत्व की भावना, इच्छाएँ, कामनाएँ, ऐषणाएँ न जाने हमें कहाँ दुर्गति के गर्त में ले जा पटकेंगी।

पाना नहीं, सौंपना सीखो

वस्तुतः ''परमात्मा को प्राप्त करना है।'' यह कहना ही अयुक्त है। वे तो सर्वत्र विराजमान हैं, व्याप्त हैं, जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठित हैं। किन्तु फिर भी हम उन्हें नहीं देख पाते, परमपिता के पावन अंक में नहीं खेल पाते, उनमें एकाकार नहीं हो पाते, इसका कारण हमारी अपनी ही कमी है। हम अपने आपको (अहं) के क्षुद्र-संकीर्ण घेरे में आबद्ध किए बैठे हैं। हमारी उपासना, हमारी साधना परिपूर्ण भाव से स्वयं को उन्हें सौंप देने को नहीं होती, वरन् गणना और मूल्यांकन द्वारा अपने कर्तृत्व के अभिमान की सुखद मादकता से युक्त होने, अपने आपको विशेष समझने, सिद्ध करने के लिए होती है। तभी तो हम उनसे विलग है।

सावधान रहो, दुर्घटना से बचो

ईश्वर के प्रति आत्म-समर्पण करने का यह अर्थ नहीं है कि हम जो कुछ करें वह सब ईश्वर कर रहे हैं। यदि यह धारणा बना ली जायेगी तो एक बहुत बड़ी भूल होगी और हमारे आध्यात्मिक जीवन में एक गंभीर दुर्घटना समझी जायेगी। आत्म-समर्पण के बल पर अपनी बुराइयों, दुष्कृत्यों को पोषण देना, अपने कृत्यों द्वारा प्राप्त असफलता को ईश्वर के मत्थे मढ़ना आत्म समर्पण की भावना के अनुकूल नहीं है। यह तो एक तरह की विडम्बना और आत्म-प्रवंचना है। समर्पण का अर्थ है- पूर्णरूपेण प्रभु को हृदय में स्वीकार करना, उनकी इच्छा प्रेरणाओं के प्रति सदैव जागरूक रहना, जीवन के प्रत्येक क्षण में उसे परिणत करते रहना।

वाङ्मय 'साधना से सिद्धि, भाग-2', पृष्ठ 5.5-5.7 से संकलित, संपादित

आयोजनों से जुड़ें शक्ति संवर्धन-संगठन-नवसृजन के सुनिश्चित लक्ष्य

पायें भक्ति साधना से शक्ति, ज्ञान साधना से प्रगति, कर्म साधना से सिद्धि

नयी दृष्टि-नयी सृष्टि

वर्ष 2017-18 की आयोजन श्रृंखला प्रारम्भ होने जा रही है। ध्यान रहे कि इसे नौ वर्षीय मातृशक्ति श्रद्धाञ्जलि महापुरश्चरण का प्रथम-सशक्त, प्रभावशाली चरण बनाना है। इसके लिए ऋषिसत्ता से नयी दृष्टि लेकर नयी सृष्टि करने के विवेकपूर्ण संकल्प करने और तद्नुसार साहसिक कदम बढ़ाने होंगे।

मनुष्य का मन बड़ा समर्थ और कौतुकी है। यह झाड़ी में से भूत और पत्थर में से करुणा निधान भगवान को पैदा कर लेता है। यह '**ज्ञान साधना**' से मूर्ख को विद्वान और विद्वान को मूर्ख बना सकता है। यह '**कर्म साधना**' से नयी सृष्टि संरचना जैसे कमाल कर सकता है। जरूरत इतनी भर है कि यह एक सुनिश्चित संकल्प कर ले और फिर अविचल भाव से उस पर टिका रहे।

प्रभु की माया भी बड़ी प्रबल है। कौतुकी मन स्वयं प्रभु की अपेक्षा उनकी माया-छाया में रुचि लेने लगता है तो भटक जाता है। साध्य को भूलकर साधनों में ही अटक जाता है। पू. गुरुदेव ने नवयुग सृजन के ईश्वरीय उद्देश्य में भागीदार बनने की प्रेरणा दी। उसके लिए प्रचारात्मक, सृजनात्मक और संघर्षात्मक चरण बढ़ाने के लिए सुनिश्चित मार्गदर्शन दिया। इन्हीं चरणों को क्रमशः पूरा करने के उद्देश्य से आयोजनों का क्रम चलाया गया। समर्थ मार्गदर्शन के अनुरूप नैष्ठिक प्रयास होने से सफलता मिलती ही है, मिली भी। लेकिन यही नैष्ठिक मन मायाग्रस्त होने लगता है।

नैष्ठिक प्रचारात्मक प्रयासों से आयोजनों में सफलता मिलती है, उससे प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। प्राप्त प्रतिष्ठा को अगले चरण सृजन संगठन के लिए प्राप्त आवश्यक संसाधन भर मानना चाहिए। जिस व्यक्ति की प्रतिष्ठा ठीक नहीं होगी, उसके साथ कोई जुड़ना नहीं चाहता। प्रतिष्ठित व्यक्ति या समूह के साथ लोग सहज ही जुड़ने लगते हैं। यहाँ चूक यह होने लगती है कि लोग प्रतिष्ठा को प्रभु प्रदत्त संसाधन मानकर अपनी कमाई सम्पत्ति मानने लगते हैं। उसे संगठन और सृजन प्रवृत्तियों के विकास में लगाने की जगह लोग व्यक्तिगत मान और प्रभाव बढ़ाने में लगाने लगते हैं। इस विसंगति से बचना चाहिए।

इस श्रृंखला में होने वाले आयोजन वन्दनीया माताजी के लिए श्रद्धाञ्जलि साधना के अंग हैं। शक्तिस्वरूपा माँ ने अपनी सभी धाराओं को अपने अभिन्न युगऋषि के उद्देश्यों के लिए समर्पित किया। उनसे यही विद्या लेने, इसी निष्ठा को फलीभूत करने के सदुद्देश्य से इस वर्ष के आयोजनों की रूपरेखा बनायी और निभाई जानी चाहिए। नयी सृष्टि करने के लिए नयी दृष्टि पाने और अडिग आस्था से काम करने के लिए भक्तियोग, ज्ञानयोग एवं कर्मयोग साधने की त्रिवेणी बहानी चाहिए।

भक्ति की आत्मीयता

माँ के प्रति भक्ति को विकसित, परिपक्व बनाया जाय। माँ अपनी आत्मीयता के आधार पर ही बच्चों के प्रजनन और पालन-पोषण के कष्टकारक कार्यों को सुखानुभूति के साथ कर पाती है। गर्भ में शिशु के आते ही उसका खाना-पीना दूभर हो जाता है। जन्म देते समय मरणासन्न कष्ट झेलना पड़ता है। पालन-पोषण के क्रम में वर्षों कठोर तप करना पड़ता है। उक्त सभी कष्ट-कठिनाइयों को माँ झेलती तो है ही, उसमें सुख, प्रसन्नता और गौरव का अनुभव भी करती है। उसकी गहन आत्मीयता का भाव ही इस कष्टदायक प्रक्रिया को हर्षदायक, आनन्ददायक बना देता है। मातृ श्रद्धाञ्जलि से जुड़े इन आयोजनों में माँ से ऐसी ही समर्थ और सृजनोन्मुख आत्मीयता पाने और उसे अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करने की साधना की जानी चाहिए।

आयोजनों के माध्यम से जुड़ने वाले नर-नारियों की संख्या और उनका श्रद्धाभरा उत्साह देखकर हम सब प्रसन्नता और गर्व का अनुभव करते हैं। लेकिन उन्हें आत्मीयता के सूत्रों से निरन्तर जोड़े रखने, सृजन कौशल से सतत विकसित-परिष्कृत करते रहने की साधना नहीं के बराबर ही कर पाते हैं। वह सृजन की गौरवमय प्रक्रिया हमें कठिन और बहुत बार अरुचिकर लगने लगती है। यह विसंगति अपने अन्दर आत्मीयता का स्तर कमजोर होने के कारण ही उभरती-पनपती है। मातृ श्रद्धाञ्जलि अनुष्ठान की ऊर्जा से हमें यह कमी पूरी करनी ही है, ऐसा संकल्प अन्तःकरण में निरन्तर उमड़ता रहे तो बात बने।

हम कुछ इस तरह सोचें, अनुभव करें कि नवसृजन के इस महा अभियान में हमने प्रभु की साझेदारी स्वीकार की है। स्नेह सलिला, शक्तिस्वरूपा वन्दनीया माताजी के हम पुत्र-पुत्रियाँ हैं। संतान के अन्दर माँ की विशेषताएँ बीज रूप में होती ही हैं। उन्हें विकसित-पल्लवित करके ही हम अपने इष्ट प्रयोजन में सफल हो सकते हैं। माँ ने कृपा करके इसके लिए ताना-बाना बुना है। यह आयोजन उनके उसी समर्थ ताने-बाने का अंग है। हमें इसका भरपूर लाभ उठाना है।

माँ बच्चों को समर्थ-स्वावलम्बी बनाये बगैर संतोष का अनुभव नहीं करती। आयोजनों के माध्यम से जुड़ने वाले नर-नारी सब माँ की विकासशील संतानें हैं। हमें माँ उन्हें विकसित करने की जिम्मेदारी सौंप रही है। हम नैष्ठिक प्रयास करेंगे तो माँ हमें उसके लिए समुचित अनुदान प्रसन्नता पूर्वक उपलब्ध कराती रहेगी। इन्हें हम इतना प्यार-सहकार दें कि ये हमसे जुड़े रहने में हर्ष और हित होने का अनुभव करें। उन्हें क्रमशः परिजन, सहयोगी के रूप में विकसित करते हुए अग्रदूत के दायित्व निभाने के स्तर तक पहुँचाने का प्रयास करें। माँ के प्रति सच्ची भक्ति हमें इसके लिए वाञ्छित कौशल, हर्ष एवं गौरव प्रदान कर सकती है।

ज्ञान की प्रखरता

विमल भक्ति के गर्भ से उपजे सदुद्देश्यपूर्ण लक्ष्यों की पूर्ति में ज्ञान की प्रखरता का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। प्रत्येक माता अपने शिशु को निश्चित रूप से स्वस्थ और संस्कारवान बनाना चाहती है। उसकी यह पवित्र चाह उससे कठोर तप साधना भी करवा लेती है। किन्तु यदि उसे स्वास्थ्य के नियमों का पता न हो, संस्कारों को विकसित करने की मनोवैज्ञानिक बारीकियों की जानकारी न हो, तो उन पवित्र भावों और कठोर तप-साधना के वाञ्छित परिणाम निकलने में संदेह ही बना रहेगा। यदि समुचित ज्ञान हो तो अपेक्षाकृत कम श्रम से भी बेहतर परिणाम पाये जा सकते हैं। इसलिए 'भक्ति साधना' के साथ समुचित '**ज्ञान साधना**' भी हम सबको करनी ही पड़ेगी।

नवयुग सृजन के लिए उपयुक्त एवं समर्थ ज्ञान की धाराएँ तो युगऋषि ने अपने भागीरथी तप से प्रवाहित कर दी हैं। उन्हें सर्वसुलभ और सुगम बनाकर जन-जन तक पहुँचाने की व्यवस्था '**वेदमूर्ति**' ने कर दी है। अब उनके साझेदार-सहयोगी के रूप में विकसित होने के लिए हमें उसकी पूरक ज्ञान साधना करनी है। हमें '**वेदमूर्ति**' के समर्थ '**वेददूत**' की भूमिका निभाने के लिए कमर कसनी होगी।

आदि शंकराचार्य ने '**प्रश्नोत्तरी**' प्रकरण में लिखा है- '**का दीर्घरोग:?**' अर्थात् लम्बा चलने वाला, कठिन रोग क्या है? उत्तर है-'**भव एव साधो।**' हे सज्जनो! यह संसार ही दीर्घ रोग है।

पुनः प्रश्न है, '**किमोषधं तस्य?**' अर्थात् भवरोग की दवा क्या है? उत्तर है-'**विचार एव।**' सुविचार ही उसकी प्रभावशाली दवा है।

उपनिषद् का भी कथन है,

''**संसार दीर्घ रोगस्य, सुविचारो हि महौषधम्।**''

अर्थात् संसार रूपी दीर्घ रोग की महान औषधि सुविचार ही हैं।

युगऋषि, वेदमूर्ति ने अपनी प्रचण्ड ज्ञान साधना से इस युग के प्रत्येक रोग की महान औषधियाँ जीवन्त विचारों के रूप में तैयार कर दी हैं। उन्होंने एक कुशल वैद्य, चिकित्सक की कठिन भूमिका बड़ी कुशलता से पूरी कर दी है। यह बड़ा-कठिन कार्य वे ही कर सकते थे, सो उन्होंने कर दिया। अब अगले चरण का अपेक्षाकृत सरल कार्य हमारे जिम्मे है, उसे हमें ही करना होगा। उसके अनिवार्य चरण इस प्रकार हैं :-

- विचार रूप सिद्ध औषधियों का महत्त्व स्वयं समझना और अपने सम्पर्क क्षेत्र वालों को समझाना।
- रोग के अनुरूप औषधि का चुनाव करके उसका सेवन स्वयं करना।
- विचाररूप सिद्ध औषधियों का महत्व स्वयं समझना और अपने सम्पर्क क्षेत्र वालों को समझाना।
- रोग के अनुरूप औषधि का चुनाव करके उसका सेवन स्वयं करना और उस अनुभव के आधार पर सम्पर्क में आने वालों को उनके रोग के अनुरूप विचार रूपी औषधियाँ बताना, उपलब्ध कराना।
- औषधि सेवन करने में नियमितता बरतने और उसके साथ पथ्य-कुपथ्य का संतुलन बिठाने में अकसर चूक होती है। उस समय उन्हें आत्मीयता भरे प्रोत्साहन, मार्गदर्शन और सहयोग की आवश्यकता होती है। यह भूमिका निभाने की क्षमता अर्जित करना ही सृजन शिल्पियों की ज्ञान साधना की सफलता मानी जा सकती है।
- गायत्री परिवार से सीधे जुड़े नर-नारियों को ज्ञान साधना में प्रवृत्त कराने और उसमें आगे बढ़ाते रहने का कार्य पहले चरण का सुगम कार्य है। इसमें कुशलता विकसित होने लगे तो अगले चरण में विभिन्न संगठन, धर्म-सम्प्रदायों के व्यक्तियों को भी इस धारा से जोड़ना होगा। भव रोग से पीड़ित तो वे भी हैं। रोगमुक्त तो उन्हें भी करना है। उज्ज्वल भविष्य के संवाहक समर्थ व्यक्तित्व तो उन सभी वर्गों में भी विकसित करने हैं। इसके लिए अपेक्षाकृत अधिक जीवन्त संकल्प, सूझबूझ और प्रयास करने होंगे। इस स्तर की ज्ञान साधना करने वाले मनस्वी भी सृजन-सैनिकों में से ही उभारने होंगे।

जब तक अपनी ज्ञान साधना का स्तर छोटा है, तब तक उक्त कार्य कठिन लगते हैं। साधना में प्रखरता आते ही वे कार्य संभव और सुगम लगने लगेंगे। ज्ञान साधना में प्रखरता लाये बगैर माँ को सार्थक श्रद्धाञ्जलि देने की भावना आधी-अधूरी ही रह जायेगी। हमें अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलियों को इस स्तर का बनाना है जिसे दुनिया सार्थक माने और माँ के लिए संतोषप्रद सिद्ध हों।

कर्म से सिद्धि

सिद्धियों का सम्बन्ध लोग चमत्कारिक-जादुई घटनाओं से जोड़ते हैं। वास्तव में सिद्धियों का सम्बन्ध कर्म की विशिष्ट कुशलताओं से होता है। अपनी आंतरिक ऋद्धियों-विभूतियों को उत्कृष्ट स्तर पर विकसित और विशिष्ट कुशलता के साथ प्रयुक्त करने की प्रमाणिक स्थिति को सिद्धि कहते हैं। इनके परिणाम बहुधा चमत्कारी भी होते हैं।

उत्कृष्ट भावों को संकल्प का रूप देने और उन्हें पूरा करने वाले साधक संकल्प-सिद्ध हो जाते हैं। वाणी को सत्य, प्रिय, हितकारी ढंग से प्रयुक्त करने वाले साधक वचन-सिद्ध हो जाते हैं। जिनके हाथ कुशलतापूर्वक उत्कृष्ट कार्य करते रहते हैं वे सिद्धहस्तों की श्रेणी में आते हैं।

हमें सृजनशिल्पी सिद्ध होना है। इसके लिए सृजन में सर्वोपरि रुचि लेनी होगी। उसके लिए समुचित भक्ति साधना और ज्ञान साधना करनी होगी। अन्दर भक्ति की आत्मीयता और ज्ञान की सदाशयतापूर्ण प्रखरता के विकास के साथ ही उन्हें व्यवहार में उतारने की साधना तपश्चर्या स्तर पर करनी होगी। इस वर्ष के आयोजनों को हमें इस उच्चस्तरीय साधना के लिए एक अच्छी प्रयोगशाला, व्यायामशाला जैसा स्वरूप देना होगा। आयोजनों के प्रयाज, याज और अनुयाज तीनों में इसी दृष्टि से नयी सृष्टि करने के लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। इसके लिए सार-संक्षेप में सूत्र इस प्रकार हैं :-

- विश्व के सभी नर-नारी माँ जगतजननी के पुत्र-पुत्रियाँ, हमारे लिए सम्माननीय और प्रिय परिजन हैं। सभी को सद्भाव और सद्बुद्धि की साधना के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर आगे बढ़ाना है। प्यार और सहकार पूर्वक सभी को सत्कर्म की साधना में लगाना है। आयोजन की सफलता के लिए साधना करने वालों को आत्मीयता के सूत्र में बाँधकर उन्हें संगठित-समर्थ बनाना है।
- सभी को भव रोग से मुक्त करके स्वस्थ, समर्थ व्यक्तित्व के स्तर तक ले जाने के लिए भवरोगों की सिद्ध औषधियों, ऋषियों के अनुभूत ज्ञान सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाना है। सफल स्वाध्याय के माध्यम से उनकी प्रज्ञा को इतना प्रखर बनाना है कि वे जीवन में उभरने वाले भेदों-अवरोधों को पार करते हुए इष्ट लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते रह सकें। इसके लिए जरूरी है-
- साधनाक्रम में जुड़ने वालों के यहाँ छोटे-छोटे स्वाध्याय सेट स्थापित कराना। नियमित स्वाध्याय के लिए प्रेरित-प्रशिक्षित करने का क्रम बनाना।
- आयोजनों में साहित्य प्रदर्शनी, छोटे-बड़े पुस्तक मेले लगाना। वहाँ ऐसे आकर्षक वाक्य लगाना जिन्हें पढ़कर लोगों में जिज्ञासा और उत्साह जागे। जैसे-

'पुस्तकें जो रोज बदल रही हैं हमारा जीवन।'

'आयें, समस्या के अनुरूप समाधान, रोग के अनुरूप औषधि ले जायें।'

- वहाँ विभिन्न प्रकार की जिज्ञासाओं के अनुरूप पुस्तकों के सेट उपलब्ध हों। वहाँ ऐसे स्वाध्यायशील व्यक्ति उपलब्ध रहें जो जिज्ञासुओं को उनकी आवश्यकता के अनुरूप पुस्तकें दिखा सकें।
- साधना एवं स्वाध्याय के माध्यम से जुड़ने वालों को प्रज्ञा मण्डल, स्वाध्याय मंडलों में गठित करके युगशक्ति, लालमशाल की छोटी-छोटी प्रामाणिक इकाईयों को जीवन्त बनाने के लक्ष्य रखें। यह सृजनशील भूमिका निभाकर ही हम माँ के प्रति सार्थक श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकते हैं।

सघन वृक्षारोपण अभियान से हो रहे हैं रूठी प्रकृति को मनाने के प्रयास

हरीतिमा संवर्धन का एक सफल अभियान

खण्डवा। मध्य प्रदेश

खण्डवा जिले के नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने जन्मशताब्दी वर्ष-2011 वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत अपने भागीरथी प्रयास आरंभ कर दिये थे, जिसका सत्परिणाम आज वहाँ प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। श्री बृजेश पटेल के अनुसार जिले में सिरसोद, डाबी, आरूद, खालवा, जूनापानी, छुट्टियाँ, हरसूद, धनगाँव, मोटका माफी, सुरगाँव

- **ड्रिप सिस्टम से सींचे पेड़**
- **आने लगी हैं पक्षियों की मधुर आवाजें**
- **उपवनों में बनायी जा रही हैं गोशालाए**

बंजारी, मूँदी, पुनासा, पंधाना, सिंगोट, इनपुट गोगाँवा, ओंकारेश्वर, छैगाँव माकन आदि 15 मुख्य स्थानों पर 24000 पौधे लगाये गये थे। ये आज 15 से 30 फीट ऊँचे वृक्ष बन चुके हैं। इस महान उपलब्धि को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

15 गाँवों में बने वन-उपवन; विकसित हो चुके हैं 15 से 30 फीट ऊँचे 24000 पेड़

श्री बृजेश पटेल के अनुसार इस महान सफलता में स्थानीय ग्रामवासियों ने जिस निष्ठा का प्रदर्शन किया, वह वंदनीय है। लोगों ने अपने खेतों की सिंचाई से पहले इन पेड़ों को पानी देने का ध्यान रखा। अनेक स्थानों पर ड्रिप सिस्टम से सिंचाई कर इन पेड़ों का जिन्दा रखा गया, इनकी सुरक्षा के भी उपाय किये गये।

सिरसोद ग्राम में लगाये गये वन में इन दिनों एक गोशाला बनायी गयी है, जिसमें 24 गौमाता पल रही हैं।

सुकता डैम के किनारे भी 5000 पेड़ लगाये गये हैं, जिनकी सिंचाई ड्रिप सिस्टम से होती है। इनके अलावा बरुण, सुकवि व जामली में भी बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण हुआ है।

15 हैक्टेअर पहाड़ी भूमि पर रोपे 11,000 पौधे

वृक्ष विहीन पहाड़ी को हराभरा वन बनाने का एक सुनियोजित कार्यक्रम

औरंगाबाद। महाराष्ट्र

गायत्री चेतना केन्द्र औरंगाबाद ने जन्माष्टमी के पावन अवसर पर खुलताबाद तहसील की ग्राम पंचायत गोलेगाँव क्षेत्र की पहाड़ियों पर बृहद वृक्षारापेण किया। कार्यक्रम संयोजक श्री राजेश टांक ने बताया कि यह एक सुव्यवस्थित, सुनियोजित कार्यक्रम था, जिसके द्वारा 15 हैक्टेअर पहाड़ी क्षेत्र को पूरी तरह से हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया गया है।

कार्यक्रम पूरे विधि-विधान के साथ सम्पन्न हुआ। 800 नागरिकों ने इसमें भाग लिया। विधायक श्री प्रशांत बंब एवं खुलताबाद तहसील के पुलिस अधिकारियों ने भी पौधे लगाये।

आरंभ में वृक्षों का पूजन किया गया। इस अवसर पर श्री राजेश टांक ने कहा कि श्रावण मास में पौधे रोपना तीर्थ यात्रा करने एवं कथा श्रवण करने जैसा ही पुण्यदायी कार्य है। सभी श्रद्धालुओं को लगाये गये पौधों का पुत्रवत या मित्रवत पालन करने के संकल्प दिलाये गये।

वृक्षारोपण स्थल पर बनाया खेत तालाब

ऐसे होगा संरक्षण और विकास

- 70 प्रकार के 11000 पौधे वहाँ रोपे गये हैं।
- वृक्षारोपण के लिए वहाँ जेसीबी से गड्ढे पहले से ही तैयार कर लिये गये थे।
- ग्राम पंचायत गोलेगाँव के निवासियों ने आगामी 2 वर्षों तक इन पौधों की नियमित रूप से सिंचाई करने और खाद देने का संकल्प लिया है। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता इस कार्य के लिए विशेष रूप से समयदान करेंगे।
- पंचायत की ओर से इस कार्य के लिए 8 टैंकरों की व्यवस्था की गयी है।
- पहाड़ियों के निकट ही एक तलाब बनाया गया है।

वन विभाग द्वारा आबंटित हुई 25 बीघा भूमि

बना रहे हैं श्रीराम स्मृति उपवन

सीकर। राजस्थान

वन विभाग सीकर ने स्थानीय शक्तिपीठ को वृक्षारोपण के लिए जिला स्टेडियम के सामने 25 बीघा जमीन आबंटित की है। गायत्री परिवार द्वारा इसे श्रीराम स्मृति उपवन के रूप में विकसित किया जा रहा है। 30 जुलाई को इस स्थान पर बृहद् वृक्षारोपण अभियान चलाया गया, जिसके अंतर्गत 625 पौधे रोपे गये। गायत्री परिवार ने इस भूमि पर नवग्रह वाटिका, राशि वाटिका, नक्षत्र वाटिका आदि का निर्माण किया है।

गायत्री परिवार द्वारा इस क्षेत्र को नगर के एक दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। वहाँ क्षेत्र में आसानी से न पाये जाने वाले पौधे भी लगाये गये हैं।

625 पौधे रोपे

बाँडी नदी को पुनर्जीवित करने के प्रयास

- **मालागिरि सामोद पर्वत और कई गाँवों में अरावली की पहाड़ियों पर गाँववासियों ने लगाये 10 से 12 फीट तक विकसित पेड़।**
- **ट्रीगार्ड भी लगाये**

जयपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार द्वारा जिले की बांडी नदी को पुनर्जीवित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अंतर्गत हरियाली अमावस के दिन नदी के उद्गम स्थल मालागिरी सामोद पर्वत पर बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। इस क्रम में वहाँ ढाक, चुरैल, करंज, कंगन, खैर आदि के बीज रोपे गये। श्री रणवीर सिंह के अनुसार आसपास के कई गाँवों के लोग इस पुनीत कार्य में शामिल हुए।

नांगल भरड़ा, म्हार कलां व खुर्द में अरावली की पहाड़ियों पर भी लगभग 10 से 12 फीट तक विकसित वट, पीपल और थूअर के वृक्ष लगाये गये। कार्यकर्त्ताओं ने इन्हें सुरक्षित रखने के लिए ट्री-गार्ड लगाये और उन्हें सींचने की जिम्मेदारियाँ भी क्षेत्रीय परिजनों को दीं।

मालागिरि पर्वत के निकट गाँव-गाँव किया जा रहा है वृक्षारोपण

सेना की ईको टास्क फोर्स के साथ किया वृक्षारोपण

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने समारोह के मुख्य अतिथि थे

युवा प्रकोष्ठ शांतिकुंज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया

हरिद्वार। उत्तराखंड

गढ़वाल राइफल्स की ही एक इकाई 'ईको टास्क फोर्स' ने शांतिकुंज के सहयोग से 25 अगस्त को अपराह्न हर की पैड़ी के निकट पंत द्वीप में वृक्षारोपण का विशेष कार्यक्रम रखा। यह कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी इसमें मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। सेना का नेतृत्व कमान अधिकारी कर्नल राणा ने किया।

दीप प्रज्वलन एवं देव पूजन के बाद कर्नल राणा ने कार्यक्रम के उद्देश्य एवं उनके द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी दी। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने पर्यावरण संरक्षण का अपना संकल्प दोहराते हुए कहा कि सेना के इस महा अभियान में हम सदा साथ हैं। आप यदि चीन की सीमा पर भी सहयोग चाहेंगे तो हम वहाँ भी पेड़ लगाने पहुँचेंगे।

इससे पूर्व शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री केदार प्रसाद दुबे ने वृक्षों के अनुदानों की चर्चा की। पर्यावरण संरक्षण के लिए तरुपुत्र एवं तरुमित्र योजनाओं की जानकरी दी एवं उपलब्धियाँ बतायीं।

वृक्षारोपण से पूर्व शांतिकुंज प्रतिनिधि ने तरु मिलन का अत्यंत भावभरा कार्यक्रम सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् लगभग 8 से 10 फीट ऊँचाई के पेड़ उपस्थित गणमान्यों, सैनिकों एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने रोपे। इस कार्यक्रम में हरिद्वार विकास प्राधिकरण के मुख्य अधिकारी, एडीएफओ. हरिद्वार, सिटी एसपी. महोदया, मुख्यमंत्री के विशेष अधिकारी भी उपस्थित थे।

कर्नल राणा, ह.वि.प्रा. के अधिकारी, आद. डॉ. प्रणव जी एवं मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि तरुमिलन करते हुए तथा शांतिकुंज-देसंविवि के दल द्वारा वृक्षारोपण

ईको टास्क फोर्स

ईको टास्क फोर्स सेना की टुकड़ी गढ़वाल राइफल्स की ही एक कमान है, जिसका गठन हिमालय की हरियाली को बचाने एवं बढ़ाने के लिए ही विशेष रूप से किया गया है। कर्नल राणा ने बताया कि यह वातावरण के अनुकूल बड़े आकार के पेड़ों का ही रोपण करती है और उसके संरक्षण के लिए कँटीले तार लगाती है। कमान ने अब तक हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में सवा करोड़ वृक्ष लगाए हैं। शांतिकुंज ने पहले भी कई बार उनके इस कार्य में सहयोग किया है।

हिमालय क्षेत्र में रोपे हैं सवा करोड़ पौधे

108 पौधे रोपे

बालाघाट। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बालाघाट द्वारा वारासिवनी तहसील के ग्राम मेंडकी स्थित शासकीय उ.मा. विद्यालय में 108 पौधे लगाये गये। वृक्षारोपण से पूर्व सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर पूरे गाँव में पौधों की शोभायात्रा निकाली गयी। घर-घर, द्वार-द्वार पर उनका पूजन हुआ। तत्पश्चात् विद्यालय में समारोह पूर्वक बच्चों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित किया गया। प्राचार्य श्री मेश्राम ने इन पौधों के संरक्षण, पोषण का वचन दिया।

स्वावलम्बी, संस्कारवान, स्वस्थ समाज की स्थापना के बड़े अभियान

नारी स्वावलम्बन के लिए लोकप्रिय होता जा रहा नाम
चेतना ग्राम संस्थान, जयपुर

जयपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार द्वारा पिछले दो वर्षों से संचालित 'चेतना ग्राम संस्थान' जयपुर की गरीब महिलाओं के लिए आस्था और विश्वास का पर्याय बनता जा रहा है। इस संस्थान ने अब तक नगर और आसपास के 45 स्थानों पर स्वावलम्बन शिविर लगाकर सैकड़ों महिलाओं को रोजगार दिलाया है। यह संस्थान महिलाओं को रोजगार दिलाने के साथ उनके बच्चों को शिक्षा व संस्कार देकर उन्हें रोजगार दिलाने के लिए भी भरपूर प्रयास कर रहा है।

चेतना ग्राम संस्थान से प्रशिक्षित बहिनें वृक्षारोपण के लिए उत्साहित

अब तक लगाये गये 45 शिविर, सैकड़ों महिलाओं को दिया प्रशिक्षण

'चेतना ग्राम संस्थान' शिक्षण के साथ बहिनों की आर्थिक स्थिति को भी ध्यान में रखता है। प्रशिक्षण के लिए उद्योग आरंभ करने के लिए उन्हें कम्प्यूटर, सिलाई मशीन, कपड़े एवं अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराता है। जो महानुभाव इस पुनीत कार्य में सहयोग करना चाहते हैं वे विभा अग्रवाल (9461309855) से संपर्क कर सकते हैं।

सक्रिय हैं 13 स्वयं सहायता समूह

चेतना ग्राम संस्थान ने प्रशिक्षित बहिनों को लेकर जयपुर में आपणी बाहेली, ममता, आनन्दी, लक्ष्य, प्रगति, संकल्प, सहचरी, उषा आदि 13 स्वयं सहायता समूहों का निर्माण किया है। इनके माध्यम से स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ, आकर्षक क्राफ्ट, हवन के किट जैसे उत्पाद तैयार किये जा रहैं। अनेक बहिनें आसान कीमत पर सिलाई का कामकाज कर रही हैं।

लाभार्थी परिवार के बच्चों को भी दे रहे हैं शिक्षा और रोजगार

चेतना ग्राम संस्थान से जुड़ी बहिनों के बच्चों के लिए जनता कॉलोनी में कम्प्यूटर की निःशुल्क कक्षाएँ चलाई जा रही हैं। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से जोड़कर संस्थान ने युवाओं के लिए रोजगार का बेहतर विकल्प तैयार किया है। वर्तमान में 120 विद्यार्थी इस योजना का लाभ ले रहे हैं।

रचनात्मक कार्यों से भी जोड़ा जा रहा है बहिनों को

इसके साथ ही सभी बहिनों को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जोड़कर स्वाध्याय, मंत्रलेखन, वृक्षारोपण जैसे साधनात्मक और रचनात्मक कार्यों में भी लगाया जा रहा है, जिसे वे बड़ी श्रद्धा और शौक के साथ करती हैं। उत्साहवर्धक बात है कि इस प्रकल्प से समाज के हर वर्ग की बहिनें लाभान्वित हो रही हैं और हर वर्ग तक युग चेतना का विस्तार हो रहा है।

हरित सरोवर अभियान से जुड़ी नयी धारा
खपरीकलाँ में दिया जा रहा है हथकरघा प्रशिक्षण

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार की छत्तीसगढ़ इकाई ने पूरे प्रदेश में गाँवों के आदर्श विकास के अभियान को प्रभावशाली बनाने के लिए 'हरित सरोवर अभियान'चलाया। उसके सहारे देववृक्षों के रोपण, स्वच्छता, जल संरक्षण जैसी अनेक धाराएँ जुड़ती गयीं। हरित सरोवर अभियान के सूत्रधान श्री के.के. विनोद के अनुसार 30 जुलाई को इस क्रम में एक और धारा जुड़ गयी, स्वावलम्बन की।

30 जुलाई को राज्य सरकार के सहयोग से राजनांदगाँव जिले के ग्राम खपरीकला में हथकरघा प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रफुल्ल परमार, प्रमुख अखिल भारतीय गुर्जर क्षत्रिय समाज

खपरीकलाँ में प्रशिक्षण लेती बहिनें

हथकरघा प्रशिक्षण सत्र के उद्घाटन समारोह में मंचासीन गणमान्य

- राज्य सरकार के सहयोग से चलाया जा रहा है 4 माह का प्रशिक्षण
- 40 लोग ले रहे हैं प्रशिक्षण

और गायत्री परिवार के जोन प्रभारी श्री दिलीप पाणिग्रही थे। श्री के.डी. हेड़उ, असिस्टेंट डायरेक्टर हथकरघा विभाग, श्री पी.एल. सहारा, सहायक संचालक कोषालय रायपुर, श्री खरे, तकनीकी प्रशिक्षक, सुकुल दैहान की गरिमामय उपस्थिति रही।

यह प्रशिक्षण सत्र 4 माह का होगा। राज्य सरकार ने इसके लिए 20 मशीनें दी हैं, जिनके माध्यम से 40 लोगों को प्रशिक्षण दिया जायेगा। पूरे प्रशिक्षण के बाद मशीनें प्रशिक्षणार्थियों को सौंप दी जायेंगी, ताकि वे अपने घरों में स्कूल ड्रेस, चादर, कंबल आदि की बुनाई कर सकें। बुनाई के लिए कच्चा सामान उपलब्ध कराने और तैयार माल को बेचने की जिम्मेदारी सरकार ने ली है।

सत्रारंभ समारोह का संचालन श्री सुरेश यादव ने किया और आभार अभिव्यक्ति सरपंच श्रीमती नंदिनी साहू ने की।

जीवट वाले परिव्राजक

पूरे अण्डमान द्वीप समूह में हुआ गायत्री चेतना का विस्तार

पोर्ट ब्लेअर। अंडमान निकोबार द्वीप समूह

पोर्ट ब्लेअर में जनवरी 2016 में गायत्री परिवार का एक विशाल कार्यक्रम आयोजित हुआ। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम से पूरे द्वीप समूह में गायत्री चेतना के विस्तार अभियान को जो गति मिली है, वह असाधारण है। पिछले 2-3 वर्षों में ही इस द्वीप समूह में गायत्री परिवार से हर कोई परिचित है। 550 द्वीपों के इस समूह में बरातांग, कदमतला, रंगत, माया बंदर, डिगलीपुर, हुतबेय, लॉग आईलैण्ड, नेल आदि 35-40 ही ऐसे द्वीप हैं जिन पर लोग रहते हैं। उन सभी द्वीपों में अखण्ड ज्योति पत्रिका पहुँचती है। हर द्वीप पर यज्ञ-दीपयज्ञ के कार्यक्रम हुए हैं। हजारों की संख्या में वहाँ नैष्ठिक गायत्री उपासक बने हैं।

अकल्पनीय कठिन परिस्थितियाँ

अंग्रेजों के राज में अंडमान निकोबार 'काला पानी' था, जनजीवन से बहुत दूर, सुनसान बीहड़ जंगलों वाला क्षेत्र। सामान्य रूप से वहाँ 'काला पानी' की सजा प्राप्त स्वतंत्रता सेनानी ही जाते थे। आज वह भारत का एक सुंदर पर्यटन केन्द्र भले ही बन गया हो, लेकिन सुविधाएँ पोर्ट ब्लेअर जैसे एक-दो द्वीपों पर ही हैं। शेष की परिस्थितियाँ तो आज भी ऐसी कठिनाई भरी हैं, जिनकी सामान्य व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता।

परिव्राजक श्री संतोष महतो ने बताया कि अधिकांश द्वीपों में वे वनवासी रहते हैं, जिन्होंने कभी आज की दुनिया देखी ही नहीं है। वहाँ न बिजली, न शिक्षा, न स्वास्थ्य सुविधा और न ही आवागमन के मार्ग हैं। मोबाइल जैसे जनसंपर्क के साधन भी नहीं हैं। इन द्वीपों तक पहुँचने का एकमात्र उपाय है पैदल यात्रा। बीहड़ जंगलों से गुजरना होता है। नदी-नाले भी पार करने होते हैं। कब साँप, कानखजूरे, मगरमच्छ पर पाँव पड़ जाये, कोई पता नहीं। यात्री अपने साथ कागजी नीबू और नमक जरूर लेकर चलते हैं, क्योंकि चलते-चलते पैरों पर जोंक चिपक जाना सामान्य-सी बात है। उन्हें नीबू और नमक से ही छुड़ाया जा सकता है। जहरीले कीड़े और मच्छरों से बचना तो बहुत कठिन है। ऐसे में कंधे पर काँवड़ की तरह अखण्ड ज्योति पत्रिका और सारा सामान रखकर आगे बढ़ना होता है।

परिव्राजकों की भूमिका

ऐसी कठिन परिस्थितियों में हर द्वीप तक, हर व्यक्ति तक पहुँचना जीवट भरा कार्य है। अपने लक्ष्य के प्रति गहरे समर्पण और प्रचण्ड मनोबल के धनी व्यक्ति ही ऐसा साहसिक पुरुषार्थ कर सकते हैं। अंडमान द्वीप समूह में यह कार्य किया है गायत्री परिवार के नैष्ठिक परिव्राजक राजाराम, सौरभ मोरे, अनिरुद्ध मानशा आकाश पवन मण्डल आदि ने।

ज्ञान विस्तार की हूक : जमीन पर ही लगा दी पुस्तक प्रदर्शनी

द्वीप समूह में युगशक्ति का प्रभाव

इन दिनों अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में अखण्ड ज्योति के 1800 ग्राहक हैं। 1000 हिन्दी पत्रिकाओं के अलावा वहाँ अंग्रेजी, बंगला, तमिल, तेलुगु, मलयाली, कन्नड़ भाषा में भी बड़ी संख्या में पत्रिकाओं के ग्राहक है। 50 हिन्दी और 200 बंगला प्रज्ञा अभियान भी वहाँ वितरित किये जाते हैं। इन्हें परिव्राजकों द्वारा सुदूर द्वीपों में पढ़े-लिखे लोगों तक पहुँचाया जाता है। परिव्राजकों द्वारा उन द्वीपों पर यज्ञ कराये जाते हैं। उन्हें बेहतर जीवन जीने के लिए गायत्री उपासना करने तथा संस्कार परम्परा से जुड़ने की प्रेरणा दी जाती है। वहाँ के निवासियों को कथा-कहानियों के माध्यम से अपनी संस्कृति का बोध कराया जा रहा है।

अण्डमान निकोबार में गायत्री परिवार की गतिविधियों से वहाँ के विद्वान-मनीषी बहुत प्रभावित हैं। राज्यपाल माननीय जगदीश मुखी, सांसद श्री विष्णु पद रे, आई.ए.एस., श्रीमती रश्मि सिंह, राजीव यदुवंशी, आई.ए.एस.- आई.पी.एस. अधिकारी, पंचायत सदस्य, बड़े व्यापारी आदि सभी मिशन का साहित्य और पत्रिकाएँ पढ़ते हैं और मिशन के विचारों एवं गतिविधियों के विस्तार में सहयोग कर रहे हैं।

समर्थता और सक्रियता का सुंदर सुयोग

सुदूर क्षेत्र अंडमान निकोबार में युगशक्ति गायत्री का इतना विस्तार न हुआ होता यदि मिशन के प्रति अनन्य भाव से समर्पित कार्यकर्त्ता सर्वश्री पवन रुंथला, अमित गोयनका, अनिल श्रीवास्तव, नीले मेगम, लक्ष्मीनारायण, हेमंत धींगरा, आर.पी. यादव आदि वहाँ मिशन के विस्तार के लिए नींव के पत्थर न बने होते। उनकी अटूट निष्ठा और अनन्य आस्था का ही प्रतिफल था कि ऐसे जीवट वाले परिव्राजक उन्हें सहयोग प्रदान करने सुदूर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तक पहुँचे।

समर्थता और सक्रियता का यह युग्म कभी कालापानी कहे जाने वाले इस क्षेत्र में युगशक्ति गायत्री के अवतरण का माध्यम बनकर उसे एक नयी पहचान दिला रहा है। वहाँ सक्रिय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद, साईंबाबा के अनुयायियों का भी इस कार्य में उल्लेखनीय सहयोग मिल रहा है।

विशेष ज्ञातव्य

- पोर्ट ब्लेअर में 2, 3, 4 फरवरी 2018 में पुनः विशाल 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित हो रहा है। इसकी तैयारियाँ जोरशोर से चल रही हैं। प्रयाज क्रम में साधना, संस्कार, स्वावलम्बन, नशा उन्मूलन, अश्लीलता निवारण, बाल संस्कार शाला, प्रौढ़ शिक्षा आदि आन्दोलनों को गति दी जा रही है।
- पोर्ट ब्लेअर में बीच बाजार में गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण किया जा रहा है। समर्पित कार्यकर्त्ता श्री अमित गोयनका ने इसके लिए अपनी 3 करोड़ रुपये की भूमि दान की है।

स्वाइन फ्लू से बचाव के लिए काढा वितरण

राजकोट। गुजरात

इन दिनों गुजरात में स्वाइन फ्लू महामारी की तरह फैल रहा है। राजकोट की गोपाल नगर शाखा इससे बचाव के लिए लोगों को जड़ी-बूटियों का काढ़ा निःशुल्क पिला रही है। शाखा परिजन प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 बजे तक यह सेवाएँ प्रदान करते हैं। 2000 से 2500 लोग तक प्रतिदिन इसका सेवन करते हैं। कई स्कूल भी अपने विद्यार्थियों को यह काढ़ा नियमित रूप से पिला रहे हैं।

काढ़ा सेवन के लिए आये स्कूल के विद्यार्थी

नई टिहरी में 5 दिवसीय साधना शिविर

गायत्री शक्तिपीठ, नई टिहरी (उत्तराखंड) पर 21 सितम्बर 2017 से पाँच दिवसीय साधना सत्रों की शृँखला आरंभ हो रही है, जो 5 दिसम्बर 2017 तक चलेगी। शिविर की तिथियाँ हैं- सितम्बर (21 से 25 तक), अक्टूबर (1 से 5 तक, 11 से 15 तक तथा 21 से 25 तक), नवम्बर (1 से 5 तक, 11 से 15 तक तथा 21 से 25 तक) और दिसम्बर माह में 1 से 5 तक।

मनमोहक प्रकृति के बीच बसी नई टिहरी में आयोजित हो रहे ये शिविर व्यक्तित्व परिष्कार और जीवन साधना परक होंगे। स्वीकृति प्राप्त साधकों को शिविर की तिथि से एक दिन पूर्व नई टिहरी पहुँचना होगा।

स्वीकृति प्राप्त करने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें -

पश्चिमोत्तर जोन, शांतिकुंज, हरिद्वार-249411
Email: northwestzone.sk@gmail.com

वनवासी क्षेत्र में बाल संस्कारशालाओं के तंत्र का विस्तार

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ धमतरी पर क्षेत्र में बाल संस्कार शालाओं के विस्तार के लिए आचार्यों का एक दिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। मुख्य प्रशिक्षक सर्वश्री चम्पेश्वर साहू, शांता साहू, वर्षा चंद्राकर, कमलेश्वरी निषाद, राजकुमार साहू, उमेश बंसोर आदि ने विभिन्न विषयों का प्रतिपादन किया।

शिविर की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए श्री दिलीप नाग ने बताया कि आज समाज में पढ़े-लिखे लोग तो बहुत हैं, लेकिन सद्गुणी-संस्कारवान व्यक्ति ढूँढ़े नहीं मिलते। संस्कारों के अभाव में आज की युवा पीढ़ी अराजकता, आतंक, भ्रष्टाचार की राह अपना रही है, नशे के चंगुल में फँसकर अपना जीवन खोखला कर रही है। आज के युग में उभरती युवा पीढ़ी को सही दिशा देना समाज की बहुत बड़ी सेवा है।

संकल्प 20 नयी बाल संस्कार शालाएँ

शिविर में 100 आचार्यों ने प्रशिक्षण लिया। 20 नये स्थानों पर बाल संस्कार शालाएँ आरंभ करने के संकल्प उभरे।

रेलवे स्टेशन पर युग साहित्य विक्रय केन्द्र

युग साहित्य विक्रय केन्द्र का उद्घाटन करते शांतिकुंज प्रतिनिधि

मुरैना। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार की मुरैना शाखा के प्रयासों से स्थानीय रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म क्रमांक 1 पर युग साहित्य विक्रय केन्द्र स्थापित करने में बड़ी सफलता मिली है। 18 अगस्त को वहाँ आयोजित एक संक्षिप्त समारोह में शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. पी.डी. गुप्ता ने फीता काटकर इस स्टॉल का शुभारंभ किया। स्टेशन मास्टर सहित गायत्री परिवार के कई गणमान्य परिजन इस अवसर पर उपस्थित थे।

स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री पी.डी. तिवारी के अनुसार विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत इस स्थापना को एक क्रांतिकारी पहल मानी जा रही है। गुरुदेव की छोटी-छोटी पुस्तकें लोगों को खूब आकर्षित कर रही हैं।

प्रार्थना करो, याचना नहीं।
श्रद्धावान बनो, अंध श्रद्धालु नहीं।
आदर्शों के प्रति आस्था जगाओ, व्यक्ति के प्रति नहीं।

आयुष मंत्रालय द्वारा बनाया जा रहा है बीवायएनएस का नया पाठ्यक्रम

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी हैं शिक्षा समिति के अध्यक्ष

डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने आयुष भवन में आयोजित पाठ्यक्रम निर्माता शिक्षा समिति की अध्यक्षता की

- बैठक में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा से जुड़ी देश की प्रतिष्ठित संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे
- सभी शिक्षण संस्थानों में एक जैसा पाठ्यक्रम लागू करने और गुणवत्ता-प्रामाणिकता बढ़ाने की तैयारी।
- अगली बैठक देव संस्कृति विश्वविद्यालय में होगी।

नई दिल्ली

देश के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों से जब से अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाने लगा है, पूरे विश्व में योग ही नहीं, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा जैसी भारतीय स्वास्थ्य विधाओं के प्रति सम्मान बढ़ा है। आयुष मंत्रालय समय की माँग के अनुरूप पूरे देश में इन विधाओं की गुणवत्ता बढ़ाने और एकरूपता लाने की दिशा में प्रशंसनीय प्रयास कर रहा है।

आयुष मंत्रालय द्वारा इसी क्रम में **'बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड यौगिक साइंस'** का नया पाठ्यक्रम तैयार किया जा रहा है। इसे बीएनवायएस की उपाधि देने वाली देश की सभी शैक्षिक संस्थाओं में लागू किया जायेगा। इस पाठ्यक्रम को तैयार करने में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की अहम भूमिका है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी पाठ्यक्रम तैयार करने वाली शिक्षा समिति के अध्यक्ष हैं।

18 अगस्त को माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की अध्यक्षता में आयुष भवन, नई दिल्ली में शिक्षा समिति की बैठक हुई। इसमें समिति से जुड़ी सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। माननीय श्री ईश्वर एन. आचार्य, निदेशक सेण्ट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन योग एण्ड नेचुरोपैथी (सीसीआरवायएन) की मुख्य उपस्थिति में श्री रामचंद्र भट्ट-एसव्यासा बैंगुलुरू, वैद्य राजेश कोटेचा, श्री सुबोध तिवारी-कैवल्यधाम पुणे, सुश्री सत्यलक्ष्मी-एमआईवाय पुणे, नीरजा रेड्डी-जीएनसीसी हैदराबाद, आरती माहेश्वरी-मुम्बई, डॉ. प्रशांत शेट्टी, के. गोविंद भट्ट-बैंगलुरु, अर्पण भट्ट-जामनगर आदि लगभग 20 संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया।

इस बैठक में पाठ्यक्रम निर्माण के लिए अब तक हुए कार्यों की समीक्षा की गयी, सुझाव दिये गये। पाठ्यक्रम निर्धारण के साथ चिकित्सकों के पंजीयन, उनकी प्रामाणिकता, शिक्षकों के प्रशिक्षण, संबंधित विषयों पर शोधकार्य और उनके प्रकाशन जैसे विषयों पर चर्चा की गयी।

माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने विश्वविद्यालय के प्रायोगिक अनुभवों के आधार पर महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये। उन्होंने कहा कि योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केवल शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के लिए ही नहीं, सृजनात्मक सोच विकसित करने और विद्यार्थियों को एकाकीपन एवं स्वार्थपरक चिंतन से उबारकर उनमें पारिवारिकता और सामाजिकता के भाव विकसित करने में बहुत सहायक सिद्ध होती है।

माननीय डॉ. साहब ने बैठक के निष्कर्ष प्रस्तुत करने के साथ इसकी अगली बैठक देव संस्कृति विश्वविद्यालय में रखने का प्रस्ताव रखा, जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

पाठ्यक्रम निर्माता शिक्षा समिति की पहली बैठक स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान, बैंगलुरु में आयोजित हुई थी। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के प्रतिनिधि श्री सुरेश वर्णवाल इस बैठक में भाग लेने गये थे। इस पाठ्यक्रम के निर्माण में देव संस्कृति विश्वविद्यालय का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है।

उप मुख्यमंत्री ने ज्ञानयज्ञ के लिए सम्मानित किया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार क्रान्ति अभियान का लखनऊ में असाधारण विस्तार करने वाले गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री उमानन्द शर्मा को प्रदेश के उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान रजत पी.जी. कॉलेज एवं लोक अधिकार मंच द्वारा 06 अगस्त को मटियारी कालेज में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर दिया गया। इस अवसर पर पूर्व लोकायुक्त एस.सी. वर्मा, पूर्व डी.जी. पुलिस पद्मश्री प्रकाश सिंह सहित अने गणमान्य अतिथि एवं कॉलेज के छात्र-छात्राएँ, संकाय सदस्य उपस्थित थे।

- रजत पी.जी. कॉलेज एवं लोक अधिकार मंच द्वारा श्री उमानंद शर्मा को दिया गया सम्मान।
- 268 पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापना की।
- 27 पुस्तक मेले लगाये।

श्री उमानंद शर्मा ने सन् 2011 में नगर एवं आसपास के 108 प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में युगऋषि का वाङ्मय स्थापित कराने का संकल्प लिया था। यह क्रमशः बढ़ते-बढ़ते 301 तक जा पहुँचा है। इस क्रम में वे 268 प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में समग्र वाङ्मय सेट स्थापित करा चुके हैं। लखनऊ स्थित राजभवन, विधानसभा, सचिवालय प्रशासन, आई.आई.एम., पी.जी.आई. लखनऊ विश्वविद्यालय, दैनिक जागरण, शिक्षण संस्थान बी.बी.डी. ग्रुप एवं नगर के अधिकांश शिक्षण संस्थानों में युगऋषि का वाङ्मय स्थापित किया जा चुका है।

गायत्री ज्ञान मंदिर, लखनऊ द्वारा नगर में 27 पुस्तक मेले भी लगाये गये हैं।

श्री उमानंद शर्मा को ज्ञानयज्ञ अभियान में विशिष्ट योगदान के लिए शांतिकुंज ने 'युग व्यास स्मृति सम्मान' प्रदान किया। लखनऊ के तत्कालीन जिलाधिकारी श्री राजशेखर ने अपने कार्यकाल में सम्मानित किया। वे लगभग 15 सामाजिक-शैक्षणिक संस्थानों द्वारा सम्मानित किये जा चुके हैं।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

युगसाधना के सह सम्पादक श्री ब.लु. सोनार

अमलनेर, जलगाँव। महाराष्ट्र

अखण्ड ज्योति की मराठी पत्रिका 'युग साधना' के 14 वर्ष तक सहसंपादक रहे और लगभग 50 पुस्तकों का मराठी में अनुवाद करने वाले श्री बंशीलाल लुकडू सोनार का 2 अगस्त 2017 को 90 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे 1974 में प.पू. गुरुदेव से जुड़े एवं एक माह का वानप्रस्थ शिविर किया। तब प.पू. गुरुदेव ने उनसे कहा था, ''तुम्हारे-हमारे पूर्व जन्मों के संबंध हैं। अब तुम्हें हमारा काम करना है।''

स्व. श्री बंशीलाल सोनार ने पुणे विद्यापीठ से मराठी (एम.ए.) तथा हिन्दी (बी.ए.) दोनों में गोल्ड मेडलिस्ट थे। उन दिनों मराठी मासिक पत्रिका बंद हो चुकी थी। अतः उन्होंने उसे पुनः प्रकाशित करने तथा हिन्दी साहित्य का मराठी में अनुवाद करने की जिम्मेदारी ली और पूरे समर्पण भाव से निभाई। उन्होंने मराठी भाषा में दो मौलिक पुस्तक-परम पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन पर 'विश्वात्म योगी' तथा 'गंगा की गोद हिमालय की छाया' भी लिखी और प्रकाशित कराईं।

- **स्व. श्री सोनार का खानदेश व मराठवाड़ा के 10 जिलों में मिशन को गाँव-गाँव पहुँचाने तथा युग साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने में अहम योगदान रहा।**
- **75 वर्ष की आयु में उन्होंने पूर्ण विरक्त होकर संन्यास ले लिया एवं आध्यात्मिक जीवन व्यतीत किया।**
- **आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 3 जनवरी 2016 को भुसावल में आयोजित युवा चेतना जागरण कार्यक्रम में भाऊ साहेब को सम्मानित किया था।**

बेटियों को नहीं, मिशन को दी 28 एकड़ जमीन

श्री रामचंद्र पाण्डेय, पड़खुरी, सीधी। मध्य प्रदेश

सेवा निवृत्त प्राचार्य और अपने मिशन के समर्पित कार्यकर्त्ता पड़खुरी निवासी श्री रामचंद्र पाण्डेय 15 अगस्त 2017 के दिन अपनी काया त्यागकर सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये। 94 वर्ष की अवस्था में उन्होंने जीवन की अंतिम साँस ली।

स्व. श्री पाण्डेय जी सन् 1971 में परम पूज्य गुरुदेव के संपर्क में आये। पू. गुरुदेव ने उनसे कहा था, ''बेटा जैसा मैंने किया, वैसा ही तू भी करना।'' स्व. श्री पाण्डेय जी ने वैसा ही किया। अपनी 28 एकड़ जमीन अपनी चार बेटियों-शांति, मालती, मांडवी और सावित्री को न देकर मिशन के नाम कर दी, जहाँ आज आदर्श ग्राम विकास केन्द्र बनकर तैयार है। उनकी बेटियाँ भी अपने पिता की भाँति मिशन के प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं।

श्री भगवान नानजी मुकाती, धार। मध्य प्रदेश

ग्राम खंडवा कुक्षी तहसील के कर्मठ कार्यकर्ता श्री भगवान नानजी मुकाती का 1 अगस्त 2017 को 62 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। वे 1985 से ही मिशन की सेवा कर रहे थे। कई अश्वमेध यज्ञ एवं ज्ञानरथों के लिए उन्होंने समयदान किया था।

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

पालनपुर। गुजरात : गायत्री शक्तिपीठ पालनपुर पर 10 से 15 अगस्त की तारीखों में प्राकृतिक चिकित्सा शिविर सम्पन्न। बुरहानपुर के विशेषज्ञ चिकित्सक सचिन पाटिल ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने प्रतिभागियों को शरीर संरचना के प्रमुख घटक मिट्टी, जल, वायु, अग्नि, आकाश में संतुलन स्थापित करते हुए स्वास्थ्य संवर्धन की क्रियाएँ करायीं।

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर में नेती करते लाभार्थी

बिहार के 6 जिलों में चल रहे हैं बाढ़ राहत एवं पुनर्वास के कार्य

अगस्त माह में आयी बाढ़ से उत्तरी बिहार के 17 जिले बुरी तरह प्रभावित रहे। जैसे ही बाढ़ के समाचार मिले, शांतिकुंज प्रबंधन अविलम्ब सक्रिय हो गया। आदरणीय डॉ. साहब, आदरणीया जीजी ने कार्यकारिणी से चर्चा कर पूर्वी जोन प्रभारी श्री रामयश तिवारी और रमाकांत पंडित को आवश्यक निर्देश देकर तत्काल 15 अगस्त को ही रवाना कर दिया।

शांतिकुंज प्रतिनिधि पटना पहुँचे। वहाँ कार्यकर्त्ताओं से चर्चा कर कार्ययोजना का निर्धारण किया गया। अलग-अलग क्षेत्रों के लिए अलग-अलग टोलियों का गठन हुआ। सर्वाधिक प्रभावित छः जिले सीतामढ़ी, कटिहार, मधुबनी, अररिया, पूर्णियाँ और किशनगंज में बृहद् स्तर पर सुनियोजित ढंग से राहत एवं पुनर्वास के कार्य चलाये जाने का निर्णय लिया गया।

केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने प्रत्येक क्षेत्र के प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा की और उनके परामर्श के अनुरूप ही अपना कार्यक्षेत्र निर्धारित किया। अधिकारियों ने गायत्री परिवार की क्षमता को देखते हुए अत्यंत चुनौतीपूर्ण क्षेत्र दिये। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने आवंटित क्षेत्रों में इतनी तत्परता और सेवाभावना के साथ अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी कीं कि वह पूरे क्षेत्र के लिए अविस्मरणीय हो गयीं।

घर-घर जाकर सर्वेक्षण कर रहे गायत्री परिवार के कार्यकर्ता

पटना शाखा ने पिकअप वैन, 50 हजार रुपये की सामग्री और 50 हजार रुपये नकद दिये, ताकि तत्काल कार्य आरंभ किया जा सके। 17 अगस्त से ही सूखे नाश्ते के पैकेट बनान-बाँटने का कार्य आरंभ हो गया।

शांतिकुंज और क्षेत्रीय प्रतिनिधियों ने इन क्षेत्रों में जगह-जगह कार्यकर्त्ता गोष्ठी लेकर सेवाकार्यों के लिए कार्यकर्त्ता तैयार किये और उनकी टोलियाँ बनाकर अलग-अलग क्षेत्रों की जिम्मेदारी सौंपी।

सभी जिलों के अनेक गाँवों का सर्वे किया गया। पाया गया कि 20 प्रतिशत मकान क्षतिग्रस्त हो गये हैं। जरूरतमंदों की सूची बनायी गयी और आवश्यकतानुसार राहत सामग्री बाँटी गयी। क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत में सहयोग करने का आश्वासन भी दिया गया।

श्री रामयश तिवारी एवं श्री रमाकांत पंडित पटना से राहत सामग्री रवाना करते हुए और प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा करते हुए

क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं का भरपूर सहयोग मिला

जनजीवन पर आये इस घोर संकट में क्षेत्रीय परिजनों ने जो सहयोग प्रदान किया है, वह अविस्मरणीय है। सबने मिलकर अपने दायित्व उत्साहपूर्वक निभाये। जोनल केन्द्र पटना में डॉ. अशोक जी एवं युवा प्रकोष्ठ प्रभारी मनीष कुमार ने नेतृत्व सँभाला। किशनगंज में राहत कार्यों का समस्त दायित्व सिलीगुड़ी के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. विजय अग्रवाल एवं श्री के.के. अग्रवाल ने नेतृत्व में चल रहा है। अररिया में श्री धर्मनाथ झा, श्री राजेश अग्रवाल, श्री विनोद पाण्डे अपनी टीम के साथ पूरे मनोयोग से सक्रिय हैं। गायत्री शक्तिपीठ रानीगंज, श्री सत्यदेव चौधरी एवं श्री राकेश रोशन जायसवाल ने भी भरपूर सहयोग दिया। पूर्णिया में डॉ. राजनंदन सिंह, श्री प्रदीप पाण्डेय, कटिहार में श्री काशीनाथ गुप्ता, सीतामढ़ी में श्री अरविंद जी (पप्पू) ने पटना जोन के सहयोग से जिम्मेदारियाँ सँभाल रखी हैं। पटना और खगड़िया के युवाओं का योगदान अविस्मरणीय रहा। सभी स्थानों पर महिला मण्डल का योगदान अविस्मरणीय था। पैकेट तैयार करने के कार्य में 300 से ज्यादा बहिनें निरंतर सेवाएँ प्रदान करती रहीं।

20 लाख रुपये की सामग्री बाँटी

आपदा प्रबंधन दल, शांतिकुंज के मार्गदर्शन में बिहार के छः जिलों में चलाये गये राहत कार्यों में समाचार लिखे जाने (1 सितम्बर) तक 20 लाख रुपये से ज्यादा की राहत सामग्री वितरित की जा चुकी थी। सूखा नाश्ता, राशन, कपड़े, कम्बल, बरतन, तिरपाल जैसी आवश्यक सामग्री वितरित की गयीं और भोजनालय चलाये गये।

पुनर्वास योजनाएँ

- अत्यंत क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत में सहयोग करेंगे।
- पूर्णिया जिले में 108 तथा सीतामढ़ी जिले में 24 नये मकान बनाकर देंगे।

अथाह संकट की घड़ी में बेघर हुए लोगों के पुनर्वास के लिए मकान बनाकर देने के संकल्प भी परिजनों में उभरे हैं। समाचार लिखे जाने तक पूर्वी जोन ने अपने सर्वेक्षण और क्षेत्रीय लोगों के उत्साह के आधार पर पूर्णिया जिले में 108 तथा सीतामढ़ी जिले में 24 मकान बनाकर देने का निर्णय लिया है। जनसहयोग के आधार पर इसे यथासंभव बढ़ाया जायेगा।

उदारपूर्वक सहयोग करें

आप भी शांतिकुंज के माध्यम से बाढ़ पीड़ितों की सेवा कर सकते हैं। अपनी सहयोग राशि नीचे दिये गये खाते में जमा करायें और जमा की गयी राशि की जानकारी पत्र, ई-मेल आदि किसी माध्यम से शांतिकुंज को अवश्य दें।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -
खाता : शांतिकुंज आपदा राहत कोष
खाता संख्या : **30491675367**
IFSC : SBIN0010588

सेवा का स्वरूप

सूखी भोजन सामग्री बाँटी : गायत्री परिवार ने इन सभी छः जिलों में आरंभ में चूड़ा, मूडी, भुने चने, बिस्किट, नमकीन, पानी की बोतल जैसी सूखी सामग्री वितरित की। प्रत्येक जिले में हजारों लोगों को प्रतिदिन भोजन सामग्री उपलब्ध करायी गयी। अररिया जिले के 18 गाँवों में सूखा सामान बाँटा गया।

रेलवे स्टेशन झौआ पर भोजन सामग्री वितरण की तैयारी

भोजनालय चलाये : कटिहार एवं सीतामढ़ी जिलों में भोजनालय (लंगर) चला सकने की व्यवस्था उपलब्ध हो गयी। कटिहार के झौआ ग्राम में और सीतामढ़ी के अथरी ग्राम में 19 अगस्त से ही भोजनालय आरंभ कर दिये गये जो समाचार लिखे जाने (1 सितम्बर) तक चल रहे थे। दोनों ही भोजनालयों में 1000 से लेकर 1500 व्यक्ति प्रतिदिन भोजन करते थे। इसके अलावा विभिन्न जिलों के कोठी, मनिया, झौआ, हरिभाषा, पिपरा, कुर्सेल, सोहन्दर, अथरी गुठेली, अरिहाना, मरही एवं आसपास के गाँवों के लोगों को गायत्री परिवार की सेवाओं का लाभ मिला।

राशन वितरण : जैसे-जैसे स्थिति सामान्य हो रही है वैसे-वैसे लोग अपने रोजमर्रा के जीवन में आने का प्रयास कर रहे हैं। गायत्री परिवार ने सभी गाँवों में हुए नुकसान का आकलन कर लिया था। उसी के आधार पर कम से कम एक सप्ताह की सूखी भोजन सामग्री, आवश्यक कपड़े, बरतन आदि उन्हें दिये जा रहे हैं।

चिकित्सा सेवाएँ : गायत्री परिवार ने गाँव-गाँव जाकर मेडिकल कैम्प लगाये और मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ भी दीं। यह कार्य डॉ. आनन्दी केशव और उनके सहयोगी दो चिकित्सकों के सहयोग से चलता रहा।

सड़क मार्ग बंद होने के कारण रेलवे के सीनियर मैनेजर श्री वी.के. मिश्र, जो कि गायत्री परिवार के ही सदस्य हैं, ने विशेष कोच की व्यवस्था कार्यकर्त्ता और राहत सामग्री झौआ स्टेशन तक पहुँचायी।

ब्रिटेन में मनायी जायेगी परम वंदनीया माताजी के पदार्पण की रजत जयंती

शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री पुष्कर राज के ढाई माह के प्रवास ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि रची

वर्ष 1993 में परम वंदनीया माताजी पहली बार किसी विदेशी दौरे पर गयी थीं। वे सबसे पहले अश्वमेध महायज्ञ लेस्टर के लिए ब्रिटेन की यात्रा पर गयी थीं। उनके 25 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। यूके.वासी इस अद्वितीय सौभाग्य के पलों को धूमधाम से मनाना चाहते हैं। विगत जून माह में लंदन पहुँचे डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की विशेष उपस्थिति में परम वंदनीया माताजी के यूके पदार्पण की रजत जयंती **25 एवं 26 अगस्त 2018** की तारीखों में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाने का निर्णय किया गया। डॉ. चिन्मय जी ने इसकी रूपरेखा प्रस्तुत की और आदरणीया जीजी, आदरणीय डॉ. साहब के साथ इस कार्यक्रम में स्वयं के आने का आश्वासन भी दिया। 22 मई से 10 अगस्त 2017 तक ब्रिटेन की प्रव्रज्या पर पहुँचे शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री पुष्कर राज ने इस समारोह की शानदार पृष्ठभूमि रच दी है।

श्री पुष्कर राज ढाई माह से अधिक यूके प्रवास पर रहे। इन दिनों उन्होंने लंदन, क्रोएडन, चिंगफोर्ड, रगबी, किसलिंक, वेमली, क्रॉली, बरमिंघम, कोवेंट्री, हेरो, लेस्टर, इल्फोर्ड, वेलिंग्ब्रो, एलिंगटन आदि क्षेत्रों का जबरदस्त मंथन किया। उनकी जागरूकता से कार्यकर्त्ता भी बहुत प्रभावित हुए। यही कारण था कि कार्यकर्त्ताओं के निर्धारण से कहीं ज्यादा लगभग दो गुने कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

पुष्कर राज ने लगभग 100 कार्यक्रम किये। कामकाजी दिनों में भी वे नैष्ठिक परिजनों को झकझोरते रहे। परिणाम स्वरूप जन्मदिन, पुंसवन, नामकरण, दीक्षा जैसे संस्कारों का क्रम चलता ही रहा।

गायत्री मंदिर क्रोएडन में कार्यक्रम प्रस्तुत करते शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री पुष्कर राज

सात-आठ कार्यक्रम बृहद् स्तर के थे। इनमें 300 से 400 लोगों की उपस्थिति रही। लंदन के मान्धाता हॉल, लंदन, नागरेचा हॉल लंदन के ही एकनाथ मंदिर, कोवेंट्री के श्रीकृष्ण मंदिर, एलिंगटन के श्रीकृष्ण मंदिर में ये कार्यक्रम आयोजित किये गये थे।

उल्लेखनीय सफलता मिली

श्री पुष्कर राज के कार्यक्रमों में हर वर्ग के लोगों ने भाग लिया। वे गायत्री परिवार की पारिवारिकता, कर्मकाण्ड की वैज्ञानिकता और युग संदेश की व्यावहारिकता से बहुत प्रभावित दिखाई दिये।

एलिंगटन के श्रीकृष्ण मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में वहाँ के परिव्राजक ने भी गायत्री की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला, जिसमें उन्होंने तमाम धार्मिक मतभेदों से उठकर सामाजिक हित में मिलकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। पुष्कर राज ने गायत्री विषयक तमाम भ्रांतियों का समाधान किया।

श्रीकृष्ण मंदिर एलिंगटन ने हर वर्ष अपना वार्षिकोत्सव गायत्री परिवार के माध्यम से ही मनाने का निश्चय किया है।

अमेरिका-कनाडा में दो वर्षों तक सेवाएँ देकर लौटे विचार क्रान्ति के लिए समर्पित परिव्राजक दम्पति

देव संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने के लिए पूरे मनोयोग से समर्पित परिव्राजक दम्पती श्री रमेशभाई एवं श्रीमती सविता बेन पटेल अमेरिका और कनाडा में दो वर्ष का समयदान कर हाल ही में शांतिकुंज लौटे। उन्होंने दो वर्ष में अमेरिका के गायत्री चेतना केन्द्र पिस्काटवे, न्यूजर्सी, ह्यूस्टन, टैक्सास और कनाडा के एडमिण्टन में समयदान किया। दो वर्षों में उन्होंने 250 से अधिक छोटे-बड़े कार्यक्रम वहाँ सम्पन्न कराये।

सूरत, गुजरात के मूल निवासी श्री रमेशभाई एवं उनकी धर्मपत्नी उन आदर्श परिव्राजकों में से हैं, जिनकी आज मिशन को सर्वोपरि आवश्यकता है। उनके बच्चे अमेरिका-कनाडा में होने के बावजूद वे पूरी तरह से युग चेतना विस्तार के लिए ही समर्पित रहे। वरिष्ठ नागरिक होने के बावजूद कार्यक्रमों की माँग के अनुसार दूर-दूर के शहरों तक जाने में उन्होंने बिलकुल संकोच नहीं किया। संभवतः परम पूज्य गुरुदेव 'उनसे जो पचास के हो चले' पुस्तक लिखकर ऐसे ही जीवन वाले परिव्राजकों का आह्वान किया है।

मुम्बई की बाढ़ में जागी मातृसंवेदना

29, 30 अगस्त को मुंबई पानी-पानी हो गयी। सबकी अपनी-अपनी समस्याएँ थीं। झुग्गी-झोंपड़ी के बच्चे तो अपने पेट की भूख का समाधान तलाशते नज़र आये। ऐसे में अंधेरी निवासी अत्यंत भावनाशील साधिका श्रीमती शशि सिन्हा का मातृत्व पुकार उठा। उन्होंने बाजार से हजारों रुपये के बिस्किट, मैगी जैसे सामान खरीदे और सैकड़ों जरूरतमंद बच्चों एवं अन्य लोगों में बाँट दिये।

इस बाढ़ में दिया, मुम्बई के कार्यकर्त्ता भी अपनी-अपनी तरह से पीड़ित मानवता की सेवा में सक्रिय रहे।

संघर्ष उन्हें ही करना पड़ता है जो चुनौतियाँ स्वीकार करते हैं। संघर्ष करने वाला कभी नहीं हारता, या तो वह जीतता है या अपनी असफलता से कुछ न कुछ सीखता है।

उत्तराखंड में आपदा प्रतिरोधक समाज का निर्माण

उत्तराखंड सरकार द्वारा सिंगापुर की तकनीकी विशेषज्ञ संस्था DHI एवं विश्व बैंक के सहयोग से हुई पहल
आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ शांतिकुंज के अनुभव और सुनियोजित तंत्र का उपयोग करेगी ये संस्थाएँ

उत्तराखंड एक मध्य हिमालयी राज्य है। यहाँ की भूगर्भीय संरचना, अत्यधिक वर्षा एवं अन्य कारणों से यहाँ भूकम्प, भूस्खलन, त्वरित बाढ़, बादल फटने जैसी आपदाएँ आये दिन होती ही रहती हैं।

जनसंख्या वृद्धि और अनियोजित विकास इन घटनाओं को बढ़ा रहा है। इसे देखते हुए उत्तराखण्ड सरकार 'उत्तराखण्ड राज्य पुनर्वास परियोजना' के अंतर्गत पूरे प्रदेश के प्राकृतिक खतरों को भाँपते हुए विकास कार्यों को सुनियोजित करने और एक सुरक्षित भविष्य की नींव रखने जा रहा है।

उत्तराखंड सरकार विषय विशेषज्ञों के माध्यम से सम्पूर्ण राज्य का आपदा जोखिम आंकलन (Disaster Risk Assessment) कराने जा रही है। कार्ययोजना की प्रमुख जिम्मेदारी सिंगापुर की संस्था DHI को सौंपी गयी है। आपदा प्रबंधन विभाग, शांतिकुंज को इस योजना का एक प्रमुख हिस्सेदार बनाया गया है।

17 अगस्त 2017 को शांतिकुंज में इस योजना संबंधी एक महत्त्वपूर्ण बैठक हुई, जिसमें डीएचआई के प्रतिनिधि मि. टॉम बरकिट, रिस्क एसेसमेण्ट कंसल्टेण्ट, सुश्री ऑडिलिआ संजय एसोसिएट एन्वायरमेण्ट कंसल्टेण्ट, श्री रजनीश कुमार, ऑफिस मैनेजर विश्व बैंक के साथ आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ, शांतिकुंज के प्रतिनिधि श्री राकेश जायसवाल ने भाग लिया। प्रदेश की परिस्थितियों और भावी कार्ययोजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई।

श्री राकेश जायसवाल ने बताया कि गायत्री परिवार राज्य में आपदा प्रबंधन कार्यों में संलग्न सबसे अग्रणी संस्था है। प्रदेश सरकार ने इस महत्त्वपूर्ण परियोजना में उनके अनुभव और ज्ञान का लाभ लेने का निश्चय किया है। योजना के अंतर्गत राज्य के प्रत्येक जिले का अलग-अलग दृष्टिकोण से आकलन किया जायेगा। सर्वप्रथम सर्वाधिक संवेदनशील 500 गाँव-शहरों को चुना जायेगा और वहाँ आपदा प्रतिरोधक कार्यों को गतिशील किया जायेगा। गायत्री परिवार के प्रशिक्षित कार्यकर्त्ता राज्य के सभी 13 जिलों में इस कार्य में सहयोग करेंगे।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, आदरणीया शैल जीजी एवं आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने राज्य सरकार की इस पहल की सराहना की और अपने पूरे-पूरे सहयोग का आश्वासन दिया।

- सभी 13 जिलों का आपदा जोखिम आकलन होगा।
- गायत्री परिवार के विशेषज्ञ कार्यकर्त्ता सर्वेक्षण एवं पुनर्वास कार्यों में शामिल होंगे।
- योजना के क्रियान्वयन के लिए 500 गाँव चुने जायेंगे।

श्री राकेश जायसवाल, मि. टॉम बरकिट और सुश्री ऑडिलिया, परियोजना पर वर्चा के समय

ब्रिटिश उच्चायुक्त सर डोमिनिक का
देव संस्कृति विश्वविद्यालय में भव्य स्वागत

सर डोमिनिक डॉ. चिन्मय पण्ड्या से वर्चा करते हुए और हथकरघा उद्योग का निरीक्षण करते हुए

भारत में ब्रिटिश उच्चायुक्त सर डोमिनिक एस्किथ अपनी पत्नी लुईस के साथ देवभूमि उत्तराखंड की यात्रा पर थे। उन्होंने देव संस्कृति विश्वविद्यालय को अपनी इस यात्रा में विशेष रूप से शामिल किया था। वे मात्र 15 मिनट का समय लेकर यहाँ आये, लेकिन यहाँ से इतने प्रभावित हुए कि पूरे तीन घंटे यहाँ बिताये। इस विवि के प्रबंधन, उद्देश्य, योजनाओं के संदर्भ में उनके मन में उठती जिज्ञासाओं में बेहतर भविष्य की संभावनाएँ साकार होती स्पष्ट झलक रही थीं।

सर डोमिनिक 2016 से ही भारत में ब्रिटिश उच्चायुक्त हैं। वे पहली बार देव संस्कृति विश्वविद्यालय आये थे। विश्वविद्यालय स्थित मृत्युंजय सभागार में उनके लिए भव्य स्वागत समारोह आयोजित हुआ। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने विश्वविद्यालय और शांतिकुंज परिवार की ओर से स्वागत-अभिनंदन किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि अच्छे व्यक्ति ही श्रेष्ठ-सभ्य समाज का निर्माण कर सकते हैं। यह विवि अपने कुलपति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के इन्हीं विचारों का अनुसरण करते हुए उज्ज्वल भविष्य के निर्माताओं को गढ़ रहा है। उन्होंने इस विवि की छोटी-सी यात्रा में विविध क्षेत्रों में मिली असाधारण सफलताओं और अनेक देशों के विश्वविद्यालयों के साथ हुए समझौतों की जानकारी दी।

शांतिकुंज द्वारा चलाये जा रहे निर्मल गंगा जन अभियान, पर्यावरण संरक्षण, आदर्श गाँव जैसी योजनाओं की जानकारी दी। डॉ. चिन्मय जी ने तरु प्रसाद के रूप में रुद्राक्ष का एक पौधा भी भेंट किया और पुनः आने का आमंत्रण दिया, ताकि समाज के उत्कर्ष की विविध योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की जा सके।

शिक्षण के साथ विद्यार्थियों में उच्च आदर्शों को प्रतिस्थापित करने वाला यह विश्वविद्यालय अद्वितीय है। • सर डोमिनिक

सर डोमिनिक एस्किथ ने अपनी इस यात्रा को ऐतिहासिक बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षण के साथ विद्यार्थियों में उच्च आदर्शों को प्रतिस्थापित करने वाला यह विश्वविद्यालय अद्वितीय है। उन्होंने कहा कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय का वातावरण सच में स्वर्ग जैसा है। उन्होंने डॉ. चिन्मय जी का आमंत्रण स्वीकार किया और पुनः आने का आश्वासन दिया।

सर डोमिनिक ने कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री सन्दीप कुमार भी मंचासीन थे। मंच संचालन डॉ. गोपाल शर्मा ने किया।

उत्कल एक्सप्रेस रेल हादसा
शांतिकुज ने अविलम्ब अपनायी सक्रियता, की भरपूर सेवा

हादसे की भयावहता दर्शाती तस्वीर

प्रशासन द्वारा शांतिकुज भेजे गये यात्री, आवास, भोजन, उपचार की व्यवस्था की

मेरठ, मुजफ़्फर नगर में घायलों की परिचर्या

- तत्काल रवाना हुआ पाँच सदस्यीय आपदा राहत दल
- मेरठ, मुज़फ्फर नगर और खतौली शाखाएँ भी सक्रिय रहीं
- शांतिकुंज ने आवास, भोजन एवं चिकित्सा की सुविधा दी

19 अगस्त को उत्तर प्रदेश में मुजफ़्फर नगर जिले के खतौली में हुए भीषण रेल हादसे से सारा देश सुपरिचित है। इस दुर्घटना में घायल यात्रियों की शांतिकुंज और गायत्री परिवार की मेरठ, मुजफ़्फरनगर शाखाओं ने भरपूर सेवा की।

जैसे ही इस दुर्घटना की सूचना शांतिकुंज को मिली, आपदा प्रबंधन दल अविलंब सक्रिय हो गया। दक्षिण पूर्व जोन के कुछ कार्यकर्त्ता एक घंटे के भीतर ही आवश्यक भोजन, पानी, दवाइयाँ आदि लेकर घटना स्थल की ओर रवाना हो गये। इससे पहले मेरठ और मुजफ़्फर नगर के परिजनों को भी आवश्यक मार्गदर्शन देकर मेरठ और मुजफ़्फरनगर के अस्पतालों में पहुँचने का आग्रह किया गया, जहाँ घायलों को भेजा जा रहा था।

शांतिकुंज और स्थानीय शाखाओं के परिजन उन सभी अस्पतालों में गये, जहाँ घायल भर्ती थे। घायलों और उनके परिजनों को सान्त्वना दी। उनकी हर संभव सहायता करने का आश्वासन दिया। मरीजों और परिचारकों को बिस्किट, फल आदि प्रदान किये।

प्रशासन का अनुरोध और शांतिकुंज की सेवाएँ

आपदा प्रबंधन कार्यों में शांतिकुंज की दक्षता और तत्परता का ही परिणाम है कि प्रत्येक आपदा की घड़ी में जिला प्रशासन सबसे पहले शांतिकुंज को ही याद करता है। उस दिन भी उत्कल एक्सप्रेस से हरिद्वार आने वाले यात्रियों के आवास, चिकित्सा एवं भोजन की व्यवस्था करने का दायित्व प्रशासन ने शांतिकुंज को सौंपा था।

लगभग 103 यात्री और मरीज सरकारी वाहनों से रात को एक बजे शांतिकुंज पहुँचे। सभी के भोजन और आवास की व्यवस्था पूर्व से ही कर ली गयी थी। आवश्यकतानुसार शांतिकुंज चिकित्सालय में उनका उपचार भी किया गया।

जीजी-डॉ. साहब की प्रेरणा व मार्गदर्शन

आपदा प्रबंधन कार्यों की समस्त गतिविधियों का संचालन शांतिकुंज में श्री राकेश जायवाल, दक्षिण-पूर्व जोन प्रभारी श्री गंगाधर चौधरी एवं श्री नेमूराम साहू की टोली कर रही थी। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, आदरणीया जीजी एवं आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ प्रभारी शांतिकुंज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी निरंतर उनसे जानकारियाँ लेते और आवश्यक मागदर्शन करते रहे।

दिवंगतों को श्रद्धांजलि

इस हादसे में 23 लोगों की जान भी चली गयी थी। अगले दिनों उन अकाल कवलित दिवंगत आत्माओं की शांति-सद्गति की प्रार्थना के साथ शांतिकुंज की यज्ञशाला में विशेष आहुतियाँ समर्पित की गयीं।

गुजरात प्रान्त की बहिनों का सत्र

शिविर का उद्घाटन करतीं शांतिकुंज की वरिष्ठ बहिनें

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में गुजरात प्रांत की बहिनों का पाँच दिवसीय नारी चेतना शिविर दिनांक 17 से 21 अगस्त की तारीखों में सम्पन हुआ। इसके अंतर्गत कुल 23 सत्रों में बहिनों को बालसंस्कार शाला, व्यक्तित्व विकास, नारी जागरण जैसे अनेक विषयों पर महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गयीं। इन विषयों पर क्षेत्रीय स्तर पर प्रशिक्षण शिविर चलाने का प्रशिक्षण भी बहिनों को दिया गया।

बहिनें अपने जीवन से प्रस्तुत करें वर्तमान जीवन की समस्याओं का समाधान।
• आदरणीया शैल जीजी

भेंट परामर्श के क्रम में आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं आदरणीया शैल जीजी ने भी बहिनों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि हमें वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान अपने जीवन से प्रस्तुत करना होगा। अच्छी बातों का प्रचार ही पर्याप्त नहीं है, युग निर्माणी बहिनों को उन्हें अपने जीवन में उतारते हुए समाज के समक्ष उनका जीता-जागता आदर्श प्रस्तुत करना होगा और विश्वास दिलाना होगा कि सुखी जीवन जीने का यही राजमार्ग है।

शिविर का समापन श्रीमती मणि दाश के उद्बोधन से हुआ। उन्होंने हर क्षेत्र में परचम लहराने वाली नारीशक्ति को अपनी खोयी आध्यात्मिक विरासत को अपने आदर्श स्वरूप में प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि नारी में समाज को बदल देने की क्षमता है और परम पूज्य गुरुदेव की भविष्य वाणी के अनुसार वही इस कार्य को पूरा करेगी। इसके लिए उन्होंने बहिनों को साधना से पात्रता अर्जित करने की प्रेरणा दी।

शिविर संचालन में श्रीमती भारती नागर, ललिता गढ़वाल, ज्योत्सना मोदी, नीलम मोटलानी, श्वेता पटेल, संध्या तिवारी, अनिता, कविता सोनी आदि की प्रमुख भूमिका रही।

कोटिरूप में हुआ बड़ा हादसा व गायत्री परिवार की सेवा

जोगिंदर नगर, मण्डी। हिमाचल प्रदेश

12 अगस्त को कोटरूपि क्षेत्र में भारी वर्षा हुई। इसके प्रभाव से पहाड़ का एक हिस्सा टूटा। पहाड़ का मलबा पठानकोट-मनाली राजमार्ग पर आया, जो 220 मीटर राजमार्ग को तोड़कर लगभग 1 किलोमीटर नीचे खाई में ले गया। इस घटना में 2 वॉल्वो बसें, कुछ छोटी गाड़ियाँ, एक चार मंजिला इमारत आदि को बहाकर नीचे नाले में ले गया। इस दुर्घटना में 55 लोगों की मौत हो गयीं।

जोगिंदर नगर शाखा के परिजन आपदा राहत कार्यों में प्रशासन का सहयोग करने पहुँचे। उन्होंने मलबे में से लाशों को निकालने के कार्य में अथक परिश्रम किया। परिजनों ने अपने नियमित यज्ञ में मृतात्माओं की शांति-सद्गति के लिए विशेष आहुतियाँ दीं, प्रार्थना की। 13 अगस्त को भवरना में हुई प्रांतीय गोष्ठी में भी ऐसी ही प्रार्थना की गयी।

गुरुगोविंद सिंह जी का 350वाँ प्रकाशोत्सव मनाया

- देसंविवि में गुरुग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश
- समारोहपूर्वक गुरुग्रंथ साहिब की स्थापना
- प्रातः 8.30 बजे से दोपहर 2.30 तक चले कार्यक्रम
- सुखमनि साहब का पाठ हुआ
- शबद-कीर्तन हुए
- गणमान्यों ने रुमाला चढ़ाया
- सामूहिक अरदास और लंगर से हुआ समापन

सिख धर्म के दशमेश गुरु गुरुगोविंद सिंह जी महाराज

देश के प्रतिष्ठित सिख संत एवं उत्तराखंड के मुख्यमंत्री जी की गरिमामयी उपस्थिति रही

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने समारोह की अध्यक्षता की

400 सिख अतिथियों व देसंविवि परिवार ने भाग लिया

22 अगस्त को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में सम्पन्न यह समागम एक अद्वितीय था। एक ही उद्देश्य के लिए कार्य कर रहे दो वर्ग-सिख समाज और गायत्री परिवार को एक-दूसरे को समझने तथा अवांछनीयताओं से मिलकर लड़ने की प्रेरणा मिली। देव संस्कृति विवि. के विद्यार्थियों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से गुरुगोविंद सिंह जी का जीवन परिचय मिला, जिसने उन्हें सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा दी।

इस समागम के आयोजन में श्री अविनाश जायसवाल ने विशेष भूमिका निभाई। संत ज्ञानदेव सिंह जी महाराज, अध्यक्ष निर्मल पंचायती अखाड़ा हरिद्वार, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री संदीप कुमार, हरिद्वार के मेयर श्री मनोज गर्ग, जिला व पुलिस प्रशासन के अधिकारी तथा सिख समुदाय के 400 अनुयायी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

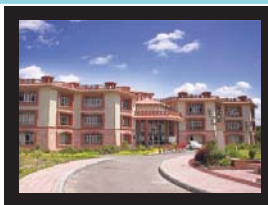

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में सिख समागम

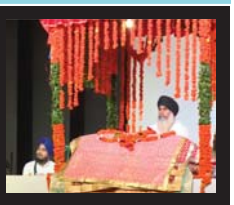

मंचासीन गणमान्य 'गोविंद गीता' का विमोचन करते हुए

1. ज्ञानदेव सिंह जी महाराज, अध्यक्ष निर्मल पंचायती अखाड़ा, हरिद्वार १. डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति, दे.सं.विवि. ३. माननीय श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड, 4.श्री वी. भगय्या, सह सरकार्यवाह, रा.स्व. संघ; ५.माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या, कुलाधिपति दे.सं.विश्वविद्यालय ६.ज्ञानी इकबाल सिंह, तख्त श्री हरमंदिर साहिब जी पटना के प्रमुख जत्थेदार 7. मा. एस.एस. अहलुवालिया, संसदीय राज्यमंत्री, भारत सरकार 8. सरदार गुरुचरण सिंह गिल, राष्ट्रीय अध्यक्ष सिख संगत

सिख समागम में उपस्थित गणमान्यों की सत्प्रेरणाएँ

व्यक्ति नहीं, विचारों को महत्त्व दें

• गुरु के समान ही गुरुग्रंथ साहिब की, गुरु के विचारों की आराधना केवल सिख धर्म में ही होती है। परम पूज्य गुरुदेव पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने भी 'व्यक्ति नहीं, विचार' का सूत्र हमें दिया है। हम उनकी 3200 पुस्तकों का प्रकाश जन-जन तक पहुँचाकर इसी परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं।

आज भी जीवंत है सिखों की श्रेष्ठ परम्परा

• अपने राष्ट्र के लिए मर मिटने का जज़्बा बहुत बड़ी बात है। सिख धर्म हमें यही पाठ पढ़ाता है। कुरबानी का इतिहास जो सिख धर्म में मिलता है, वह अन्य कहीं नहीं मिलता। यही परम्परा शहीद भगत सिंह से लेकर आज देश की रक्षा कर रहे सिख रेज़ीमेण्ट के वीर जवानों में दिखाई देती है।

- डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय

गायत्री परिवार की सेवाएँ सराहनीय

• हरमंदिर साहिब पटना के प्रमुख ज्ञानी इकबाल सिंह ने गुरुगोविंद सिंह जी के जीवन पर प्रकाश डाला और गायत्री परिवार के कार्यों को उनकी शिक्षाओं के अनुरूप बताया।

• ज्ञानी इकबाल सिंह जी, प्रमुख जत्थेदार पटना साहिब

सिखों का इतिहास पढ़ाया जाये

• हमें सिखों का इतिहास पढ़ना चाहिए। वर्तमान समय में यह बहुत प्रासंगिक है। सिखों का इतिहास हमारे देश के पाठ्यक्रमों का हिस्सा होना चाहिए।

• सिख देश की आबादी का मात्र 1.99 प्रतिशत हिस्सा हैं, लेकिन देश-विदेश में जहाँ भी हैं, आन, बान, शान से जीवन जी रहे हैं।

• सिखों ने राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया है। सेल्युलर जेल में फाँसी पाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में से 97 प्रतिशत सिख थे।

• डॉ. एस.एस. अहलुवालिया, राज्यमंत्री भारत सरकार

गुरुगोविंद सिंह न होते तो यह देश न बचता

• आज भारत का अस्तित्व गुरुगोविंद सिंह जी के कारण है। उन दिनों आक्रान्ताओं, लुटेरों की एक हजार साल की गुलामी के कारण भारतवासियों का आत्मसम्मान लगभग मर चुका था, मिट्टी की तरह हो गया था। गुरुगोविंद सिंह ने उस मिट्टी में से फौलाद बनाकर खालसे खड़े किये। घास-फूस जैसे लोगों से ही प्रचण्ड आग तैयार कर दी, जिससे विदेशी आक्रान्ता जलकर समाप्त हो गये।

• सरदार गुरुचरण सिंह गिल, राष्ट्रीय अध्यक्ष सिख संगत

तोड़ने वाली ताकतों को पनपने न दें

• सिख एक जिंदा कौम है। इसमें आज भी गुरुगोविंद सिंह की वीरता, त्याग, बलिदान, उदारता दिखाई देती है। आज तमाम शक्तियाँ देश को तोड़ना, कमजोर करना, भेदभाव पैदा करना चाहती हैं। हमें ऐसी शक्तियों को पनपने नहीं देना है।

• श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, मुख्यमंत्री उत्तराखंड

विषमता मानवता के विरुद्ध है

• समाज की, धर्म की सेवा करनी है तो गुरुगोविंद सिंह जी जैसा जीवन जीना चाहिए। उन्होंने एकात्मता का संदेश दिया, बताया कि वर्ण, धर्म, जाति, ऊँच-नीच आदि के नाम पर विषमता मानवता के विरुद्ध है। हमारा धर्म एक है-मानव धर्म।

भक्ति और शक्ति का संगम

• शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय भक्ति और शक्ति का संगम है। यहाँ ऐसी ही शिक्षा दी जाती है। गुरु गोविंद सिंह जी का जीवन हमें बताता है कि भक्ति में ही शक्ति है। शक्ति है पर भक्ति नहीं तो व्यक्ति राक्षस है। हमारी भक्ति समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, गुरुगंथ साहिब के प्रति, महापुरुषों के प्रति हो सकती है।

• श्री वी. भगय्या जी, सहकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

खालसा एक सोच है

• खालसा एक ऐसी सोच है जो बताती है कि हृदय में भक्ति और कर्म में शौर्य की, समर्पण व संकल्प की आवश्यकता है। गुरुगोविंद सिंह ने खालसा की यह सोच हमें नहीं दी होती तो यह देश टुकड़े-टुकड़े हो गया होता। तब न संस्कार बचते, न सभ्यता बचती। यह देश सदा गुरुगोविंद सिंह जी का ऋणी रहेगा।

गुरुगोविंद सिंह और गुरुदेव

• हम जब परम पूज्य गुरुदेव के जीवन को देखते हैं तो हमें उसमें गुरुगोविंद सिंह जी का ही प्रकाश दिखाई देता है। गुरुदेव ने हमें राष्ट्र के प्रति अगाध निष्ठा रखने और अटूट प्यार करने का संदेश दिया।

• सिख धर्म की दो प्रेरणाएँ हैं- संगत (मनुष्य में देवत्व के उदय के लिए सज्जनों का संग-सहकार) और पंगत (मानवमात्र एक समान, एक पिता की सब संतान)

• सामाजिक कुरीतियाँ तब भी थीं और आज भी हैं, बस फैशन की तरह उनका वेष बदलता जा रहा है। इनकी गुलामी से देश को आजाद कराने के लिए पंच प्यारों जैसे सच्चे खालसा बनना होगा।

• डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विवि.

उत्तर प्रदेश की शिक्षामंत्री देव संस्कृति विश्वविद्यालय आयीं

डॉ. चिन्मय जी मंत्री महोदया को देसंविवि में बना बैग भेंट करते हुए

उत्तर प्रदेश की शिक्षा मंत्री श्रीमती अनुपमा जायसवाल शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय आयीं। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने उनका मार्गदर्शन किया। यहाँ के वातावरण, व्यक्तित्व परिष्कार के महान उद्देश्य और गतिविधियों से वे बहुत प्रभावित हुईं।

मंत्री महोदया ने शांतिकुंज में बड़ी श्रद्धा के साथ ऋषियुग्म के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' को नमन किया। शांतिकुंज की शिक्षण परम्परा की जानकारी ली तथा देवात्मा हिमालय मंदिर, जड़ी-बूटी उद्यान, पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

डॉ. चिन्मय जी ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के लक्ष्य और विशेषताओं का परिचय कराया, शिक्षण परम्परा एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य और शांतिकुंज के रचनात्मक कार्यक्रमों से मंत्री महोदया को अवगत कराते हुए समाज के नवनिर्माण में उनकी उपयोगिता की चर्चा की। अन्य शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के नैतिक विकास के लिए ऐसी गतिविधियाँ आरंभ करने का निवेदन किया।

श्रीमती अनुपमा जायसवाल : शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय जैसी संस्थाएँ ही हमारे देश और संस्कृति की वास्तविक पहचान हैं

डॉ. चिन्मय पण्ड्या : देव संस्कृति विश्विविद्यालय की विद्यार्थियों के नैतिक विकास की योजनाएँ अन्य शिक्षण संस्थानों में भी लागू की जायें।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in **एवं** news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 12.9.2017
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT VIDE NO. WPP/ 04
RENEWED 2015-2017

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के प्रशंसनीय प्रयास

आलीदर, कोडीनार। गुजरात

प्रज्ञापीठ आलीदर से जुड़े नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने क्षेत्रीय युवाओं को जीने की सही राह दिखाने वाले कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं, जिनके उत्कृष्ठ परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं। शाखा ने तहसील के अनेक विद्यालयों, सामुदायिक भवनों एवं प्रज्ञापीठों में सनबोर्ड पर कुल 395 सद्वाक्य लगाये हैं।

किशोर केन्द्र का संचालन करते परिजन

- सनबोर्ड पर 395 सद्वाक्य लगाये
- शिक्षक सम्मेलन आयोजित किया
- किशोर केन्द्र आरंभ किये

सोमनाथ जिले का शिक्षक सम्मेलन कोडिनार तहसील के नालंदा विद्यालय में हुआ। 150 शिक्षकों ने इसमें भाग लिया। शासकीय दायित्वों से आगे बढ़कर समाज के नवनिर्माण का नैतिक दायित्व अनुभव करते हुए बच्चों में सद्गुणों की प्रतिष्ठा के संकल्प दिलाये गये। ऐसे ही प्रयासों से इस वर्ष कोडीनार तहसील के 3500 विद्यार्थी भा.सं.ज्ञा.प. में शामिल हो रहे हैं।

पीछवा एवं जीथला गाँव में किशोर केन्द्र आरंभ किये गये हैं। 50-60 युवा विद्यार्थी इनका लाभ ले रहे हैं। इन प्रयासों ने विद्यार्थियों में सृजनात्मकता और संवेदना जगाने में अहम भूमिका निभाई है।

बाढ़ राहत कार्यों में भागीदारी

हाल ही में बनासकाँठा जिले में आयी बाढ़ में आलीदर शाखा ने राहत कार्यों में भाग लिया। श्री गोविंदभाई परमार के अनुसार माध्यमिक शाला आलीदर के विद्यार्थियों का इसमें विशेष योगदान रहा। युवाशक्ति के सहयोग से आलीदर ने 70 मन गैंहूँ, 3 मन बाजरी, 2 बोरी बर्तन, 25 बोरी कपड़े तथा 10,000 रुपये की नकद राशि बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ भेजी थी।

मातृशक्ति श्रद्धांजलि महापुरश्चरण

आलीदर शाखा ने प्रत्येक गुरुवार को सायंकाल संस्कार केन्द्र पर सामूहिक जप करने और रविवार को 5 चालीसा पाठ करने का निर्णय लिया है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह

छिंदवाडा। मध्य प्रदेश

30 जुलाई को गायत्री चेतना केन्द्र, छिंदवाड़ा के सभागार में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा वर्ष 2016-17 का पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य आतिथि अपर कलेक्टर श्री आलोक श्रीवास्तव और विशिष्ट अतिथि पुलिस अधीक्षक श्री गौरव तिवारी आई.पी.एस. थे। भा.सं.ज्ञा.प. जिला संयोजक श्री सुभाष वर्मा के अनुसार इस समारोह में वरीयता प्राप्त छात्र छात्राओं के साथ विशिष्ट सहयोगी गुरुजनों, सर्वाधिक छात्र संख्या के आधार पर संस्था प्रमुखों का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर प्रांतीय प्रभारी श्री सीताराम चौधरी, श्री के.पी. रावत भोपाल एवं बालाघाट के जिला संयोजक श्री महेश खजांची विशेष रूप से उपस्थित रहे।

15 शिक्षण संस्थानों को भी सम्मानित किया

सनावद, बड़वानी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ सनावद पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2016 का तहसील स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह प्रोफेसर डॉ. भूपेन्द्र भार्गव के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। उन्होंने परीक्षा की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित विद्यार्थी, उनके पालक एवं शिक्षकों से कहा कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण वहाँ के परिवार और समाज पर निर्भर है। जिस समाज में व्यक्ति संस्कारित होंगे, वही समाज सुखी रह सकता है।

समारोह में कक्षा 5वीं से कॉलेज तक के वर्गों में तहसील में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे कुल 27 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। 100 एवं 200 से अधिक विद्यार्थियों को परीक्षा में सम्मिलित कराने वाली पंद्रह संस्थाओं को भी सम्मानित किया गया। आचार्य श्रीराम गुरुकुल उ.मा.वि. बमनगाँव को तहसील में सर्वाधिक 300 से अधिक विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित कराने पर विशेष सम्मान प्रदान किया गया।

समारोह के विशिष्ट अतिथि महेश पाटीदार ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। जिला संयोजक नंदकिशोर गुप्ता ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पालक-शिक्षकों को बच्चों के संस्कारों पर विशेष ध्यान देने, उन्हें गुणवान बनाने का अनुरोध किया। संस्कार देना हमारा परम दायित्व है। शांतिकुंज प्रतिनिधि उपझोन प्रभारी मदनलाल वरान ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन भगवानदास बिर्ला ने किया।

डिवाइन वर्कशॉप में 500 विद्यार्थियों की भागीदारी

भिलाई। छत्तीसगढ़

'दिया' छत्तीसगढ़ की भिलाई शाखा ने 2 अगस्त को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रिसाली भिलाई में एवं 5 अगस्त को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, करंजा भिलाई में डिवाइन वर्कशॉप का आयोजन किया गया जिसमें देना बैंक की सीनियर मैनेजर सुश्री तिलोत्तमा मृदुली, विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती उषा बेदी, वरिष्ठ व्याख्याता श्री एन एल साहू, श्री लोकनाथ साहू, मधुलिका पांडे, सुमन साहू एवं अन्य सभी शिक्षकों के साथ लगभग 500 छात्र छात्राओं ने भाग लिया।

कार्यशाला का प्रारम्भ इंजीनियर युगल किशोर द्वारा व्यक्तित्व परिष्कार के विषय से किया गया। उन्होंने बताया कि व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है, और आत्म चिंतन,आत्म शोधन, आत्म निर्माण, एवं आत्म विकास के माध्यम से व्यक्तित्व का परिष्करण संभव है। इस कार्यशाला में दिया छत्तीसगढ़के प्रांतीय संयोजक डॉक्टर पी एल साव ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि, युवा ही राष्ट्र के निर्माता है और वह अपनी प्रतिभा और समय का सही उपयोग कर राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी निभा सकते हैं। दिया संगठन के ही अन्य सदस्य श्री योगेन्द्र कुमार जी ने रचनात्मक आंदोलन पर प्रकाश डालते हुए युवाओं के दायित्व के बारे में समझाया एवं उन्हें व्यसन से दूर रहने व पर्यावरण संरक्षण के निमित्त 15 अगस्त को सभी से कम से कम एक पेड़ लगाने का संकल्प भी करवाया।

आयोजन को सफल बनाने में विद्यालय कर्मचारियों के अतिरिक्त क्षेत्र के सभी गायत्री परिजनों ने अपना अपना सहयोग दिया।

स्वतंत्रता दिवस ने भरे देशभक्ति के रंग

सम्मानित किये गये सैनिक-शहीद

उज्जैन। मध्य प्रदेश

सृजन सैनिकों की छावनी के रूप में विख्यात गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर मनाये गये स्वतंत्रता दिवस समारोह में राष्ट्रीय भावनाओं को समृद्ध करने वाले अनेक कार्यक्रम शामिल किये गये। इनसे प्रभावित होकर समारोह में शामिल परिजनों-नगरवासियों ने राष्ट्रीय प्रगति में सहयोग देने के संकल्प लिये।

- शक्तिपीठ पर प्रतिष्ठित माता गायत्री, माँ सावित्री और माँ कुण्डलिनी को तिरंगी वेषभूषा में सजाया गया था।
- ध्वजारोहण समारोह में श्री महाकालेश्वर श्रीवास्तव ने परिजनों को दैनंदिन जीवन में स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने के संकल्प दिलाये।
- नक्षत्र वाटिका में वृक्षारोपण किया गया।

अपराह्न शहीदों के परिजनों के लिए विशेष कार्यक्रम हुआ। इस में भारत माता की जय, भारतीय संस्कृति की जय, वंदे मातरम जैसे जयघोषों के बीच शहीदों के निकट परिजनों को अंगवस्त्र, मोती की माला, तिरंगा झंडा, वैजयंती और युग साहित्य प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती उर्मिला तोमर ने इस अवसर पर वीर जवानों के प्रति सम्मान का यह भाव सदैव बनाये रखने की प्रेरणा दी। उपजोन संयोजक श्री महाकालेश्वर श्रीवास्तव एवं डॉ. शशिकान्त शास्त्री ने भी अपने विचार रखे।

फौजी श्री कमल सोनी ने सीमा पर सैनिकों की कठिन जीवनचर्या बतायी, जिसे सुनकर श्रोताओं की आँखें छलक उठीं।

सैनिक श्री जादौन की चार पीढ़ियाँ सेना में सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। उन्होंने कहा कि व्यवसाय तो हर कोई कर लेता है, पर जिससे पूरा देश खुशहाल रह सके ऐसी सेवा हमारे परिवार द्वारा की जा रही है। श्री जादौन सैनिक भर्ती के लिए निःशुल्क कोचिंग भी चला रहे हैं।

सम्मानित शहीद एवं गायत्री परिवार के परिजन

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रतिभाओं का सम्मान

सावित्री बाई फुले इ.कॉलेज में

जेएसएस टेक्निकल यूनिवर्सिटी में

नोएडा। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा ने भासंज्ञाप का जिला एवं राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह ग्रेटर नोएडा के कासना स्थित सावित्री बाई फुले बालिका इंटर कॉलेज में आयोजित किया। उल्लेखनीय है कि इस विद्यालय की छात्राएँ जिला एवं राज्य स्तर पर अग्रणी रही हैं। चेतना केन्द्र व्यवस्थापक श्री आर. एन. सिंह, श्री उमाशंकर गुप्ता एवं विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती रीमा डे ने वरीयता प्राप्त विद्यार्थियो को सम्मानित किया। श्रीमती रीमा डे को भी बच्चों को प्रेरणा और प्रोत्साहन देने के लिए सम्मानित किया गया।

जेएसएस टेक्निकल यूनिवर्सिटी में

दिल्ली में महाविद्यालय स्तर पर भी परीक्षा आयोजित हुई और बहुत सफल रही। इसमें वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों और विशिष्ट सहयोगियों को सम्मानित करने के लिए जेएसएस टेक्निकल यूनिवर्सिटी में कार्यक्रम आयोजित हुआ। गायत्री चेतना केन्द्र के प्रतिनिधियों के साथ विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करने के लिए वहाँ जीएसटी कमिश्नर और नीति आयोग के एडिशनल सेक्रेटरी भी उपस्थित थे।

पेड़ों को राखी बाँधी

कोलकाता। प .बंगाल

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर गायत्री परिवार यूथ ग्रुप ने अपने वृक्षारोपण अभियान के 353वाँ सप्ताह पेड़ों को राखी बाँधकर मनाया। इस अभियान से जुड़े नैष्ठिक परिजन खरदह के शांतिनगर में पहुँचे और वहाँ चार वर्ष पूर्व लगाये गये वृक्षों को राखियाँ बाँधीं। इस अवसर पर नये पौधे भी लगाये गये और उन्हें भी राखियाँ बाँधी गयीं।

अभियान संयोजक श्री रवि शर्मा के अनुसार यह कार्यक्रम अत्यंत उत्साहवर्धक था। महानगर पालिका के पौरपिता एवं समाजसेवी श्री काजल सिन्हा तथा चेअरमैन इन काउंसिल श्री तापस सिन्हा ने कार्यक्रम में भाग लेते हुए कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

दिया, कोलकाता की सदस्य युवतियाँ पेड़ों को राखी बाँधते हुए

प्रज्ञा पुराण कथा ने सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूकता बढ़ायी

नागपुर। महाराष्ट्र

शक्तिमाता नगर, नागपुर में 25 जुलाई से 11 अगस्त तक प्रज्ञा पुराण कथा का विशाल आयोजन हुआ। इन पंद्रह दिनों में कथा व्यास सौ. रेखा बालबुध ने परिवार खण्ड में दी गयी परम पूज्य गुरुदेव की शिक्षाओं को प्रेरणाओं को सरस कथानकों से सजाते हुए प्रस्तुत किया। पारिवारिक सद्भाव, सहगमन, बच्चों के संस्कार, प्रगतिशील नारी, एकता, समता, शुचिता, ममता, स्वच्छता, शालीनता, श्रमशीलता, सेवाभावना जैसे अनेक विषयों पर मार्मिक विचार मंथन हुआ।

3 अगस्त को नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। श्री गंगाधर बालबुधे ने कार्यक्रम की सफलता में योगदान देने वाले कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया। परिजनों ने भी भावुक होकर श्री बालबुधे दंपत्ति का सत्कार किया।

प्रज्ञापुराण महोत्सव की पूर्णाहुति पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ हुई।

अंतरराष्ट्रीय युवा सम्मेलन में गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व किया

काठमांडू। नेपाल : अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस काठमांडू धुलीलेख में अन्तरराष्ट्रीय विश्व युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें भारत देश की तरफ से अखिल विश्व गायत्री परिवार के दिया टीम के सदस्य श्री अनुज कुमार मौर्य समिल्लित हुए। सम्मेलन में नेपाल, भारत, स्विट्जरलैंड व जर्मनी के वक्ताओं ने भागीदारी की।

श्री अनुज कुमार ने आयोजन में आए सभी परिजनों अतिथियों व प्रतिभागियों को गुरूवर का सद्साहित्य भेंट स्वरूप देते हुए बताया कि एक अच्छी पुस्तक ही व्यक्ति को एक अच्छा मनुष्य बना सकता है। कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता के रूप में श्री पी डी सारस्वत जी आमन्त्रित किये गये जिन्होंने गुरूदेव के विचारों को अपने विषय 'समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन के प्राचीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी' की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति की।